सफलता के छः वर्ष

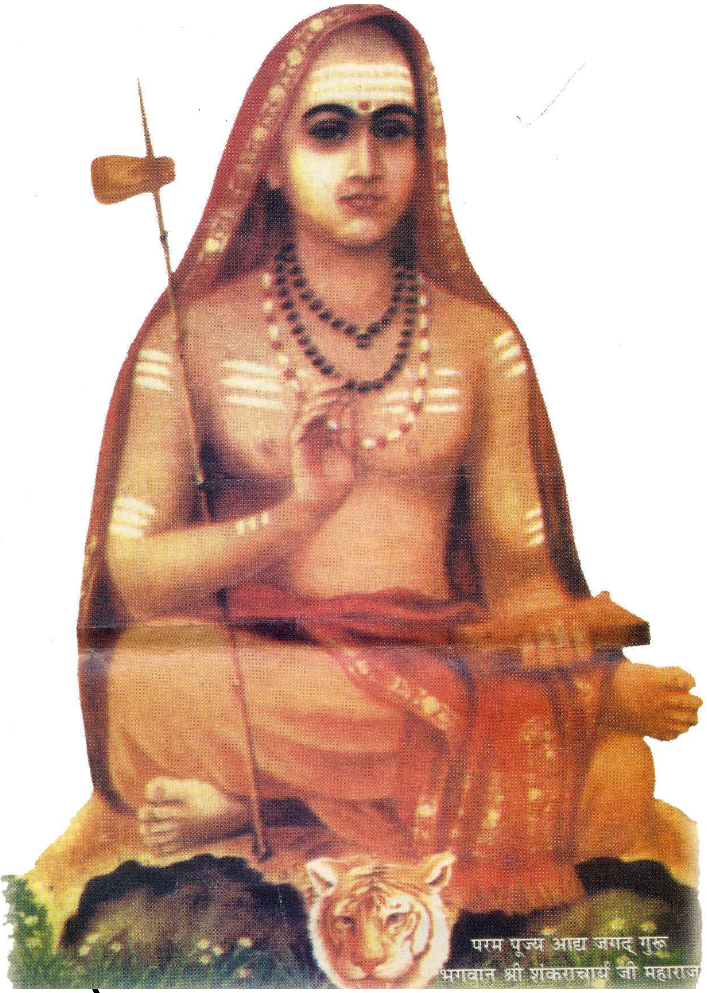
परम पूज्य आद्य जगद् गुरू
भगवान श्री शंकराचार्य जी महाराज

कीमत
5 रू0

नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस पर हार्दिक बधाई

मो हलीम अंसारी

पूर्व इंका प्रत्याशी,
विधानसभा क्षेत्र, झूसी, इलाहाबाद,
निवास: सहसो, इलाहाबाद

नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस पर हार्दिक बधाई

चौधरी परशुराम निषाद

प्रदेश प्रभारी, अपना दल
निवास: प्रयाग घाट रेलवे स्टेशन के पास,
दारागंज, इलाहाबाद

स्नेहांगन कला केन्द्र

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, मो0 09335155949

हमारे संस्थान से निम्न हॉबी कोर्स व डिप्लोमा कोर्स चलाये जाते हैं. कोर्स पूरा होने पर प्रमाण–पत्र भी दिया जाता है।

1.सिलाई 2.रेशम की कढ़ाई 3.मशीन की कढ़ाई 4.सिंधी कढ़ाई 5.जरदोजी की कढ़ाई 6.जरी की कढ़ाई 7.पॉट डेकोरेशन(12 प्रकार के) 8.आइस्क्रीम 9.बेकिंग (केक,बिस्किट बनाना) 10.कुकिंग 11.इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स 12.कम्प्यूटर कोर्स 13. पेंटिग(सभी प्रकार की) 14.ब्लॉक प्रिटींग 15.स्क्रीन पेंटिग 16.पैचवर्क 17.मुकैश 18. रंगोली 19.टाई एण्ड डाई 20.बाटिक 21.स्पंज, स्प्रे प्रयोग 22.फ्लॉवर मेकिंग 23. ब्यूटीशियन 24.बरगद का पेड़

विशेष:1. एक साथ 5 प्रवेश पर 10प्रतिशत की छूट
2. समयः सायं 3 बजे से
3. शनिवार अवकाश 4.शाखा खोलने हेतू भी सम्पर्क करें

आर.एन.आई. न० यू.पी.हिंदी ८३८०/२००१

अपनी बात

वर्ष:6, अंक:04 फरवरी 07

विश्व स्नेह समाज

लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालय:
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसी: 09335155949
ई–मेल:vsnehsamaj@rediffmail.com
gokul_sneh@yahoo.com

आवश्यक सूचना:
पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

अन्दर पढ़िए

बेवजह हंगामा करते हैं सांसद–7
अमेरिकी दादा गिरी के नमूने–8
नायक या खलनायक का अंत–9
इलाहाबाद के ऐतिहासिक तीर्थ स्थल–10
परमात्मा के अंदर भूत, भविष्य और वर्तमान सभी हैं–13
रामचरित मानस दर्शन–14
सेक्स सीडी और सियासत –16

स्थायी स्तम्भ:

प्रेरक प्रसंग–6
कहानी–जगन की कनिया –17, बाल कहॉनी:चॉद वाली राजकुमारी–20,रिक्शा चालक–22 कविताएं–**15,22**
सफल व्यक्तित्व–21 कैरियर–: प्रबन्ध अथवा प्रबन्धन आखिर है क्या?**आया जमाना ई–बाइक्स कास्वास्थ्य**, साहित्य समाचार
अध्यात्म,समीक्षा,जरा हंस दो मेरे भाय, इधर उधर की : ज्योतिष, लघु कथांए

अस्पष्ट देखना ही गलत देखने की क्रिया है

आसमान, सूर्य, चांद, तारे आदि को किसने बनाया है? इनके बारे में जानने की प्यास ही मनुष्य में एकाग्रता व खोज की प्रवृत्ति को पैदा करती है. किसी आवाज, फोटों व पत्र को तत्काल कहीं भेज देना समय व दूरी पर पूर्ण विजय नहीं, जब हम अपनी उपस्थिति ब्रह्माण्ड में प्रत्येक बिन्दु पर हर समय पाते हैं और भूत, वर्तमान व भविष्य के बारे में प्रतिपल जानकारी रखते है और पूरे ब्रह्माण्ड में केवल एक ही वस्तु को देखते है तभी हम समझते है कि समय व दूरी पर विजय प्राप्त हो गयी है. ऐसी स्थिति में हम अपनी शाश्वत उपस्थिति यानी अमरता की अनुभूति करते हैं. हमारे व परमात्मा के बीच की दूरी शून्य है यानी–हम व परमात्मा एक दूसरे के इतना अधिक निकट है जितना अग्नि व अग्नि की दाहक शक्ति एक दूसरे के निकट हैं. सत्य की अनुभूति होते ही स्पष्ट हो जाता है दृश्व व अदृश्य जगत् परमात्मा की शक्ति का घनीभूत रुप है. चूॅकि जहॉ परमात्मा की शक्ति है वहीं परमात्मा की उपस्थिति है. अतः दृश्य व अदृश्य जगत् की अनुभूति परमात्मा की अनुभूति है. सिर से पैर तक जो कुछ हम अनुभव करते है वह परमात्मा की अनुभूति है. जब हम शारीरिक अनुभूतियों को सुख व दुःख कहते हैं तो उसी क्षण हम सीमित हो जाते हैं. इस स्थिति में हम अपूर्णता की अनुभूति करते हैं और कुछ न कुछ पाने के बेचैन रहते हैं. जब तक हम परमात्मा की अनुभूति में रहते हैं तब तक हम सब कुछ जानते रहते हैं. हम कौन है? संसार क्या है? हम कहॉ से आये? आदि प्रश्नों के उत्तर जान जाते हैं और भूत, भविष्य व वर्तमान के ज्ञाता हो जाते हैं.

सुख–दुःख अनुभूति का कारण एकाग्रता की कमी है. जब एकाग्रता कम होती है तो चीजें स्पष्ट नहीं दिखायी पड़ती हैं. अस्पष्ट देखना ही गलत देखने की क्रिया हैं. इस प्रकार सुख–दुःख अनुभव की स्थिति में हमारी सुनने, देखने, स्वाद व गन्धा की अनुभूतियॉ अधूरी होती हैं. हम अधूरा सोचते है और हर कार्य अधूरा ही छोड़ देते हैं. ऐसी स्थिति में हमें अनुभव होता है कि हम अधूरे है, हममें काफी कमी है. कभी हम अपने रुप में कमी देखते हैं तो कभी हम अपनी चाल में और इसी तरह से हम सभी को देखते हैं. किसी में कोई कमी नजर नहीं आती और ब्रह्माण्ड की सभी रचनायें स्वर्गिक लगती है. कभी भी किसी से अलग होने का मन नहीं करता हैं. हम तपस्या करते हैं, परमात्मा से वरदान मांगते है कि हम सदैव सभी के साथ रहें. इस स्थिति की अनुभूति ही स्वर्ग का दर्शन हैं. एक बार धर्मराज युधिष्ठिर से उनके गुरु ने कहा कि 'युधिष्ठिर संसार में जो भी बुरा हो जाओ ढूंढकर ले आओं' धर्मराज युधिष्ठिर बहुत ढॅूढे लेकिन उन्हें पूरे संसार में कुछ भी और कोई भी बुरा नहीं मिला. उन्हें कोई भी घटना, कोई भी चीज बुरी नहीं लगती थी. यही कारण है कि युधिष्ठिर को स्वर्गदर्शन के लिये किसी और शरीर की आवश्यकता नहीं पड़ती थी. वे उसी से स्वर्ग आया जाया करते थे. प्रकृति का हर रुप, जीवन का हर क्षण ईश्वर, सौन्दर्य, शक्ति व शान्तिमय दिखाई पड़ता हैं. यह अनुपम दर्शन ही स्वर्ग का दर्शन हैं.

जी. के. द्विवेदी

चिट्ठी आई है

प्रिय मित्रवर आपको, आपके परिजनों एवं समस्त परिचितों तथा विश्व स्नेह समाज पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों को

मंगलमय नव वर्ष

मेरी यह शुभकामना, मंगलमय नव-वर्ष।
ज्योति सफलता की जगे, मिले हर्ष-उत्कर्ष।
मिले हर्ष-उत्कर्ष, सदा हो सुखद सवेरा।
रोग, शोक, दुख मिटे, दूर हो सकल अँधेरा।
कहें 'अखिल' नित मिले तुम्हें, खुशियों की ढेरी।
मन में हो सुख-शान्ति, कामना है यह मेरी।।
जीवन पथ पर तुम बढ़ो, मन में हो विश्वास।
कर्म सदा करते रहो, आएगा मधुमास।।

नूतन वर्ष ही हर सुबह आपके जीवन में आशा, उल्लास,विकास एवं सुकर्म के सूर्य का और हर शाम सुख-शान्ति,सौभाग्य एवं आनन्द के पूर्ण चन्द्र का उदय करें तथा प्रत्येक दिवस-रात्रि उपलब्धियों एवं खुशहाली से परिपूर्ण रहे।

भूत भविष्य के चक्र में, उलझा है इन्सान।
'अखिल' सफलता मन्त्र है, वर्तमान सन्धान।।
धन वैभव है तभी तक, सभी मिलाते हाथ।
'अखिल' ध्यान रखिए सदा, स्वास्थ का सब साथ।।
समय बली होता सदा, रखिए यह नित ध्यान।
पद, पैसे या ज्ञान का, मत करिए अभिमान।।
ज्ञानी, ध्यानी, संयमी, त्यागी, धनी महान।
सभी सरल बस कठिन है, खुद बनना इन्सान।।

अखिलेश निगम 'अखिल',
अपर पुलिस अधीक्षक, लखनऊ

कुछ समय के लिए ही सही, जिन्दगी के कुछ पल गुजरते नहीं, ठहर जाते हैं, वो पल रह रह याद आते हैं मुर्धन्य विद्वान, पुराण पुरुष, वरेण्य साहित्यकार मनीषी. दीपावली का जगमगाता दीप मेहन्दी लगे हाथ जो सोलह श्रृंगार से श्रृंगारित हो तुलसी दल में धूप धरे उसकी सुवसित सुरुचि पूर्ण प्रकाश किरण आपको अज्ञात वरदान, आपकी झोली में धर जाय ऐसी बलवती कामना है मुझ अकिंचन की.

दीपोत्सव का पावन प्रकाश जीवन भर आपका पथ प्रशस्त करता रहे. इस मांगलिक पर्व पर मैं हृदयतः कामना करता हूँ कि आप निरन्तर प्रगति, समृद्धि और समुन्तति के नित नव सोपान तय करते रहें. लुप्त हो रही मानवीय उष्मा का नये सिरे से संचार हो और मनुष्य अपनी उदारता व उदान्त मनीषा के अनुरुप प्राणीमात्र के प्रति सहिष्णु और सहायक बन कर जीवन यात्रा अन्तिम छोर छूये. पीयूषपाणि भगवान धन्वन्तरि की अहैतुकी कृपा से आप और आपका परिवार प्रतिपल निरामय रहता हुआ जीवन की सारगर्भित उपादेयता को रेखांकित कर सकें इन्हीं

मंगलकामनाओं के साथ

प्रीतड़ली रा पंथ म पग दीज्यो मत कोय
जावतड़ा दीख्या घृणा बाबड़ता न ह कोय
शुभम् करोति कल्याणं शत्रु बुद्धि विनासायः
आरोग्यं धन सम्पदा दीपो ज्योति नमोस्तुते।
दीपोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं,
पूरी होवें सभी आपकी सद्‌भावनाएं

वंशी लाल पारस, भीलवाड़ा, राजस्थान

दो हजार सन् छः का अंक सितम्बर मैने पाया।
सम्पादक गोकुलेश्वर जी का पढ़ विचार हरषाया।
पितृपक्ष की श्राद्ध प्रथा, सचमुच है एक छलावा।
पितरों के गुण को अपनाने का है समुचित दावा।
सम्पादक जी की प्रेरक लगी है मुझको वाणी
गलत प्रथा को अपनाना ही भारी नादानी।
आजादी के बाद देश में भ्रष्टाचार बढ़ा हैं
नेताओं ने ही चुनाव में ऐसा ढंग गढ़ा है।
डॉ० राजबुद्धिराजा का लेख सारगर्भित है
श्री वीरेन्द्र यादव का नारी का सन्दर्भ उचित है.
विश्वविद्यालय गौरवमय यह रहा इलाहाबाद
जिसके चलते म्योर महाशय को करते हम याद।
हिन्दी रानी बनकर भी तो बनी नौकरानी है
डॉ०एन०एस.शर्मा, श्रद्धा की यर्थाथ वाणी है
विविध, विषय, सूचना विपुल है, है सरस मधुर कविताएं
संपादक जी! मेरी बधाइयॉं शतशः अपनाएँ।

महाकवि डॉ. योगेश्वर प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, पटना जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, नीरपुर, पटना.

पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. इस क्षीणकाय पत्रिका में कितना कुछ समाहित है. इसको पाठक ही अनुभव कर सकता है. अपनी बात से नैतिक मूल्य का अध्याय प्रारम्भ होकर प्रत्येक पृष्ठ की रचनाओं द्वारा चरित्र निर्माण, संवेदना जागरण, भयहीन समाज, प्राकृतिक शक्ति और पाठकों के चिन्तन को झकझोरता है. चाहें वे कुत्ते नहीं है जनाब हो, ब्रज की होली का स्वरुप, मानस की बहुप्रयोजनीयता, श्री अमरनाथ जी ऐसे रचनॉए सूचनाओं का नया झरोखा खोजती है. घमंड, व्यंग्य जीवन की सच्चाईयों के सम्मुखीन करता हैं. सभी लघुकथाएं प्रभावोत्पादक हैं. ऐसे स्तरीय रचना देने के लिए बधाई. पत्रिका के सुखद भविष्य के लिए अनन्त शुभकामनाएं.

डॉ. श्रीमती शारदा पाण्डेय, भारद्वाजपुरम, प्रयाग

नववर्ष की अनंत मंगलकामनाओं सहित प्रभु से प्रार्थना है कि प्रतिपल आपके लिए सुख शांति, समृद्धि व यश बढ़ाने में सहायक हो. सृजन व सेवा में संलग्न रहे. स्वस्थ रहे मस्त रहें. आपका अपना भाई रामचरण यादव 'याददाश्त', बैतूल,म.प्र.

चिट्ठी आई है

मरने वालों की श्रद्धांजलि बचने वालों को भरोसांजलि

मानो या न मानो
जानो या न जानों
पर यह सच है
कि दुनियां में जब
एक आदमी भी
भूखा सोता है
तो भर-पेट खाने वाले
हम-तुम-सब
एक रात के लिए
आतंकवादी होते हैं.

एक रिपोर्ट

कितनी शर्मनाक बात है
कि आजादी के
साठ साल बाद भी
हमारे देश में
चार करोड़-आठ लाख
सोलह हजार-बत्तीस सौ चौसठ
लोग ऐसे हैं
जिनका पेशा भीख माँगना हैं.

एक सपोर्ट

ग़नीमत है,
इनमें नेताओं को
शुमार नहीं किया गया
वरना बात
और भी शर्मनाक होती!

घनश्याम अग्रवाल, अकोला, महाराष्ट्र

* * *

सूरज सा मुख-मण्डल चमके,
उर में शशि की शीतलता।
पॉव प्रगति चूमे तव फैले,
दिग-दिगंत में कीर्तिलता।
मंगल द्वार उचारे मंगल,
वचन-कर्म में पावनता।
आयु, बुद्धि, बल नया साल दे
चिंतन में तव व्यापकता।

वर्ष दो हजार सात की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

अजय चतुर्वेदी कक्का, बीजपुर, सोनभद्र,उ.प्र.

नववर्ष की हार्दिक शुभ कामनाएं स्वीकारें
नया वर्ष दे आपको
खुशियों का संदेश!
सभी मनोरथ सिद्ध हो
विघ्न हरे विघ्नेश!

विश्वास है सपरिवार स्वस्थ सानन्द होगें.

सूर्यदेव पाठक पराग, गीतावाटिका, गोरखपुर

....

नववर्ष का सत्सत् अभिनंदन
पुलकित कर दे सद्भावों से।
हर्षित हो अन्तर्मन सदैव,
विचलित न हो बाधाओं से
असीम शुभकामनाओं के साथ

ईश्वर शरण शुक्ल, आई.पी.सी.एल., इलाहाबाद

....

१. अमर रहे
विश्व स्नेह समाज
स्नेह सुहाये
२. अच्छी सामग्री
सुधी पाठक हेतु
लेकर आये
३. विद्वतजन
पंढ़े चाव से इसे
मन को भाये
४. गोकुलेश्वर
कुमार द्विवेदी जी
गुण दर्शायें
५. प्रतिभावान
आप सम्पादक जी
स्नेह वर्षायें
६. हम सबके
स्नेह बंधन में
आप बधायें
७. सफल रहें
आप जीवन भर
नेह निभायें

पत्रिका का अंक मिला. आवरण एवं अंतरंग दोनों आकर्षक. रचनाएं अच्छा मानसिक खुराक देने वाली हैं. इतनी महत्वपूर्ण पत्रिका के सम्पादन के लिए द्विवेदीजी आपको बहुत-बहुत बधाई.

मेरा विश्वास हैं कि यदि इरादा पक्का रहें, लक्ष्य उत्तम हो और मन साफ रहे तो सफलता मिलेगी ही! मैं संकल्पित हॅू कि जब तक शांति रहेगी तब तक सम्पादन/प्रकाशन जारी रहेगा. आपके मंगलमय जीवन की कामना करता हॅ.

डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर' संपादक, अंग माधुरी, गाधीनगर, पटना

* * *

आपकी पत्रिका का एक अंक देखने को मिला. पत्रिका का नाम सार्थ लगा. विविधा विषयों पर जानकारी तथा प्रकाश डालने वाली सामग्री तथा स्वास्थ्य, शादी मंच, कैरियर, ज्योतिष, विशेषता. हमें सबसे ज्यादा आर्कषित करने वाला स्तंभ 'नवोदित कवि' बहुत अच्छा लगा.

हिंदी एक ऐसा माध्यम है जो कई दिलों को जोड़ती है और देश में ही नहीं अपितु कहीं भी रहने वाले अपने साथियों से संपर्क करने के लिए चाहता हैं.

स्नेह बना रहें यही प्रार्थना करता हॅू.

अशोक देशपांडे, जहीराबाद

++++++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज पत्रिका के सम्पादक एवं समस्त पाठकों को नववर्ष २००७ की शुभकामनाएं-

नव वर्ष सुमङ्गल कारक हो शुभ हो तुमको सब को जग में।
जन-जीवन में सुख-शांति रहे सुख-सौरण्य रहे मिलता मग में।।
परिवेश मिले मन वॉछित ही यश कीर्ति मिले बढ़ते पग में।
शुभ श्रीपद हो यह वर्ष 'कवीश' रहे समता सरि में नग में।।

कालीचरण दीक्षित, शाहजहॉपुर

+++++++++

शुभ दीपावली

स्नेह-सद्भावना-अर्चना के सुमन
भव्य आलोक मय चेतना के सुमन
सिद्धि-समृद्धि शुभ्र दीपावली
आप को प्यार-शुभकामना के सुमन.
अभिनन्दन

मुनीर बख्श आलम, सोनभद्र, उ.प्र.

शेष आगे पृष्ठ......

प्रेरक प्रसंग

समय की कीमत

जगद्गुरु शंकराचार्य हमेशा लोगों को यही सीख देते थे कि समय का सही उपयोग करो. समय बहुत कीमती है, इसलिये इसे सद्कार्यो में लगाओ. एक दिन एक प्रसिद्ध उद्योगपति जगद्गुरु के प्रवचन सुन रहे थे. शंकराचार्य समय के सदुपयोग पर ही चर्चा कर रहे थे. उनकी यह बातें सुनकर उस उद्योगपति ने सवाल किया, 'समय को लेकर आपके पवित्र वचनों को सुनकर मैं दुविधा में पड़ गया हूँ. कृपा करके मुझे बताइए कि यदि किसी व्यक्ति के पास काम का इतना दबाव हो कि वह अपना समय दूसरों की सहायता या परोपकार जैसे अच्छे कामों में न लगा पाए तो वह क्या करें?

शंकराचार्य उस व्यक्ति को देखकर मुस्कुराए और बोले, 'वत्स मेरा परिचय तो आज तक ऐसे किसी व्यक्ति से नहीं हुआ जिसे पूरे दिन भर में एक क्षण भी खाली न मिलता हो. फिर समय की कमी बताकर तुम क्या स्पष्ट करना चाहते हो? इसका तो यह मतलब हुआ कि तुम्हारा जीवन व्यवस्थित नहीं हैं. तुम्हें समय का मूल्य ही नहीं पता हैं.' जगद्गुरु की यह बात सुनकर वह उद्योगपति चुप हो गया. शंकराचार्य ने आगे समझाते हुए कहा, 'जिसे तुम समयाभाव कह रहे हो वह वास्तव में अव्यवस्थित जीवन जीना है. जिन लोगों का जीवन व्यवस्थित नहीं होता वे अमूल्य जीवन को भार स्वरुप ढोते हैं. जीवन यह नहीं कि कितने वर्ष जिंदगी जिए. वह यह है कि हमने अपने समय का कितना सदुपयोग किया.

वाणी का प्रभाव

स्वामी रामतीर्थ अमेरिका की सभा में उपदेश देने के बाद मार्ग में एक अट्टालिका के छत पर बैठी एक सुन्दरातिसुंदर महिला को देखा...सड़क पर खड़े स्वामी ने परम पावन दृष्टि से सुविचार से उसका अदभुताकर्षक रुप देख विचार किया कि सुन्दर सभी नारियॉ भगवती परमाद्याशक्ति के रुप में हैं. 'देव्यासमस्तास्तव देवि भेदाः' अतः दर्शनीय पदार्थ देखा जाता है चाहें पुष्प का सौन्दर्य हो या शिशु का या ब्रहम द्वारा निर्मित सुन्दर नर-नारी का. सच्चिंतन पावन विचार दृष्टि से उस अमेरिकन महिला के मुखार विन्द सौन्दर्य, रोड पर खड़े टकटकी लगाकर देखने लगे, बस तुरन्त उस महिला ने उच्च स्वर में कमाडिंग भाषा में स्वामी को चेतावनी देते शायरी में कहा-*जो तेग अबू अलम देखते हैं, वो सर अपना पहले कलम देखते हैं.*.. यह सुन सन्यासी रामतीर्थ ने भी नीचे खड़े-खड़े शायरी में ही अपनी भावना प्रकट की-*न तुझसे गरज कुछ न अब्र से तेरी, मुसब्बिर की अपनी कलम देखते हैं.*.स्वामी रामतीर्थ जी के कथन का उस पर प्रभाव पड़ा वह सुन्दरी प्रभावित हो स्वामी के चरणों में नतमस्तक हो उनकी अनुयायी हो गई. आज वक्ता गला फाड़फाड़ कर उच्चात्युच्च स्वर में सभा में भाषण करते हैं. श्रोता इस कान से सुना दूसरे कान से निकाल देता है. सदुपदेश का प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि वक्ता कहता है कुछ है करता कुछ है. यदि सदुपदेश शास्त्रोक्त बातें स्वयं पहले अपने आचरण में उतारे पुनः भाषणोंपदेश करें तो श्रोता पर प्रभाव अवश्य होता है.

आदाब अर्ज़

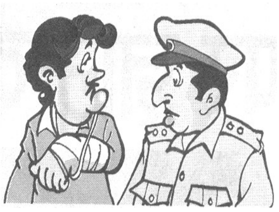

थाने में रिपोर्ट से पहले,
अपने हाथ-पैर तुड़वा लो।
फिर सेवा में हाजिर होकर,
यथायोग्य सेवा करवा लो।।

* * *

दुआ न हो कोई तुमसे, तो बद्दुआ भी न करो
भला न कर सको किसी का, तो बुरा भी न करो।
ज़ेडए ख़ान, कंसुर्वा, राजस्थान

* * *

उनको आप से मिलने का हुआ मर्ज है
एक बार मिल लें, इसमें क्या हर्ज है।
वह आपके लिए ही धूनी रमाए है
दूर से ही कर लेगें-आदाब अर्ज़ है।
गज्जे भैया, बरेली, म.प्र.

ऐ मेरे दिल कहीं और चल, फिर नई खोज में निकल
जो मिले तू उसको छल, होना तुझे है सफल।
भास्कर तैलंग, होशगाबाद, म.प्र.

शादी ऐसे घर में हो, जहां ससुर मालदार हो
साला मरियल-सा हो, और सास बीमार हो
पत्नी कैसी भी चलेगी, पर सालियां दो-चार हों।

* * *

जलाई थी प्रेम की चिंगारी, बेवफ़ाई की आग भड़की है।
प्रेम दुकान और दिल सामान है, ऐसी आजकल की लड़की है.
नरेन्द्र कुमार शर्मा, अजमेर, राजस्थान

पास में न पाई
पर गले में टाई
फटा फुल पेंट,
पूरा जेंटिलमेंट। **डॉ. वीरेंद्र जैन 'विद्यार्थी'** केरबना, म.प्र.

मुद्दा

बेवजह हंगामा करते है हमारे सांसद

समाज प्रवाह, मुबई

क्या आप जानते हैं कि राजधानी दिल्ली में रायसीना हिल्स पर स्थित देश की सबसे बड़ी पंचायत यानी संसद पर जब लोकतंत्र के पहरुवे हो-हल्ला मचाकर कामकाज ठप्प कर देते है तब वे गैर-जिम्मेदारी की किसी पराकाष्ठा पर होते हैं? जरा इन आंकड़ों पर गौर करें-

जब वो हंगामा करके पूरे दिन के लिए संसद ठप्प कर देते हैं तो उसकी न्यूनतम् कीमत् एक करोड़ साठ लाख रुपये होती है. एक पूरे दिन काम न होने का मतलब है संसद सत्र का १/६ वां हिस्सा बर्बाद कर देना.

जब संसद सदस्य सुबह से लेकर लंच तक के लिए संसद के कामकाज को रद्द करवा देते हैं तो इसका मतलब होता है कि वे गांवो में बनी ५० प्राइमरी स्कूल की बिल्डिगों को ढहानें जितना नुकसान कर चुके होते हैं.

यह तो मुखड़ा है अगर ऐसे ऑकड़ों की सूची यहॉ लिख दी जाए तो यह लेख की बजाए बही-खाता नजर आने लगेगा. क्योंकि भारतीय संसद, दुनिया में जितने भी देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था है, उन सबके प्रतिनिधियों से कम काम करते है. आमतौर पर हमारे यहॉ सांसद के कुल चार सत्र होते है. कभी-कभार विशेष सत्र अलग से होते हैं. इन सत्रों में औसतन १५० घंटे कामकाज होता है. इस तरह पूरे साल में हमारे सांसद औसतन ७० से ७५ दिन काम करते हैं. जबकि काम के लिहाज से अगर देखें, तो अमेरिका के सांसद साल भर में औसतन ११५ से १२० दिन काम करते हैं और आलसीपन के लिए मशहूर अंग्रेज भी साल भर में औसतन १०० से १०५ दिन काम करते हैं. आस्ट्रेलिया, कनाडा यहॉ तक कि जब पाकिस्तान में लोकतंत्र होता है, उन दिनों वहॉ की नेशनल असेंबली में भी हमारे यहॉ से ज्यादा काम होता है.

एक तरफ हमारी गिनती दुनिया में सबसे श्रम वाले देश के रुप में होती है जहॉ लोगों को दो जून की रोटी कमाने के लिए औसतन १० से १६ घंटे तक काम करना पड़ता है. इसमें भी काम तक पहुँचने में लगा समय शामिल नहीं होता. इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमारे सांसद जिम्मेदारियों को लेकर कितने संवेदनशील है? हमारे यहॉ किसी सांसद को एक महीने में जो न्यूनतम सुविधाएं, वेतन और भत्ते के रुप में मिलती है वह लगभग ७५ हजार रुपये कीमत की होती है जबकि देश की सबसे बड़ी प्रशासनिक सेवा के सर्वोच्च अधिकारी को भी औसतन ३५ से ४० हजार रुपये मिलते है.

आम कामगारों का वेतन दुनिया में सबसे कम वेतनों मे हैं. हमारी औसतन राष्ट्रीय आय चौबिस हजार रुपये सालाना है. जिसका मतलब यह हुआ कि औसत से जो आम आदमी वेतन पाता है उसे १२ सें १६ घंटे तक इसके लिए काम करना पड़ता है. दूसरी तरफ सांसद है जो साल में महज ७० से ७५ दिन काम करपाते है और न्यूनतम वेतन ७५ हजार के आसपास हासिल करते है. इसके साथ लाखों रुपये की जो उन्हें रियायती सुविधाएं मिली है, उन सबका इनमें कोई हिसाब ही नहीं हैं. खाना, यात्रा, संपर्क जैसी सुविधाए हासिल है वैसी सुविधाएं शायद ही किसी गरीब मुल्क के सांसदों को हासिल हो.

इसके बावजूद देश में संसद के कामकाज में लगातार गिरावट देखी जा रही है. सन् १९९५ के पहले साल में औसतन पांच प्रतिशत संसद का कामकाज बाधित होता था जबकि १९९५ के बाद का औसतन ३८ प्रतिशत कामकाज बाधित होने लगा. मजे की बात है कि यहॉ जितने भी आंकड़े दिये जा रहे है वह सिर्फ लोकसभा के सांसद सदस्यों को गिनकर आकलन किया जा रहा है. क्योकि वे देश के आम लोगों के सीधे जनप्रतिनिधि होते है. मगर हमारे यहॉ एक अपर हाऊस भी है. उसमें भी सांसदों की अच्छी-खासी तादाद है.

> सांसद जब हंगामा करके एक दिन संसद को ठप्प कर देते हैं तो उसकी न्यूनतम् कीमत् एक करोड़ साठ लाख रुपये होती है. एक पूरे दिन काम न होने का मतलब है संसद सत्र का 1/6 वां हिस्सा बर्बाद कर देना.
>
> हमारे यहॉ किसी सांसद को एक महीने में जो न्यूनतम सुविधाएं, वेतन और भत्ते के रुप में मिलते है वह लगभग 75 हजार रुपये कीमत की होती है जबकि देश की सबसे बड़ी प्रशासनिक सेवा के सर्वोच्च अधिकारी को भी औसतन 35 से 40 हजार रुपये मिलते है.

इसलिए अगर दोनो सदनों के सांसदों की गैर-जिम्मेदारी के चलते हुए नुकसान जोड़ा जाए, तो यह इन आकंड़ों, से भी कहीं ज्यादा होगा. दरअसल, हमारे यहॉ सांसद हर किसी की जिम्मेदारी सुनिश्चत करना चाहते हैं. आईएएस अधिकारी से लेकर एक मामूली-सी दुकान में काम करने वाले व्यक्ति की भी जिम्मेदारी या तो सुनिश्चित है या सुनिश्चित किये जाने की बात हो रही है. लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि लोकतंत्र को चलाने वालो की कोई जिम्मेदारी सुनिश्चित नहीं है. कोई सदस्य कितना काम करेगा, इसके लिए कोई नियम नहीं है. आमतौर पर जब कहीं हड़ताल होती है, तो यह बहस तेज हो जाती है कि हड़तालियों को हड़ताल के दौरान का वेतन न दिया जाए. लेकिन क्या जब सांसद संसद में हंगामा खड़ा करते है तो कोई भी सांसद या सरकार का कोई भी मंत्री, महज सिद्धात के तौर पर भी इस तरह की कोई बात कभी कोई उठाता है? एक और गौर करने की बात है. संसद में जब भी सांसदों के वेतन, भत्ते, और उनकी सुविधाओ को बढ़ाने के लिए कोई प्रस्ताव पेश होता है, तो उस प्रस्ताव पर मिनटों के अंदर पूरी संसद एक हो जाती है. हाल ही का एक ताजा उदाहरण वेतन वृद्धि का है. फिर चाहे वो भाजपा के सदस्य हो या कांग्रेस के. वहॉ विचारधारा कत्तई आड़े नहीं आती क्योंकि सवाल अपनी सुविधाओं और अपनी कमाई का होता है. लेकिन दूसरी तरफ कई-कई तो प्रस्ताव लगभग पिछले ५० सालों से अभी तक संसद में बिना बहस के पड़े हैं. महिलाओं को ३३ प्रतिशत आरक्षण दिये जाने के मुद्‌दे को लेकर पिछले दो दशकों से बहस हो रही है लेकिन आज तक कोई प्रस्ताव पारित नहीं हो सका, क्योकि वह सांसदों को फायदा नहीं पहुँचा रहा है. उसमें कई किस्म की दिक्कत आ सकती है. दूसरी तरफ पूर्व सांसदों के वेतन भत्ते का एक प्रस्ताव जब सदन में आया, तो सिवाय कुछ कम्युनिस्ट सांसदों के, सबने उस पर बिना देर किए अपनी सहमति की मुहर लगा दी. ऐसा ही हाल ही में सांसदों की वेतन वृद्धि व भत्ते के लिए हुआ है जिसमें सभी कुछ दुगुना कर दिया गया. पहला प्रश्न तो यह कि क्या वेतन भत्ता लेने स्वयं उसकी मनमानी करने के अधिकारी हो सकते है? इसका जिम्मा तो किसी अन्य निस्पक्ष एजेन्सी को दिया जाना चाहिए. दूसरी बात इनकी मनमानी या कार्य पद्धति के लिए भी कोई स्वतंत्र एजेन्सी जो इन पर अनुशासन की बंदिश लगाये-वैसी होनी चाहिए.

चीन के बाद हमारी आबादी दुनिया में सबसे ज्यादा है. हमारे जन-प्रतिनिधि दुनिया में सबसे बड़े जनसमूह के प्रतिनिधि होते हैं. एक अमेरिकी सांसद जहॉ औसतन साढ़े तीन से चार लाख लोगों का सांसद होता है, वहीं हमारे यहॉ औसतन एक सांसद १५ से २१ लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करता है. इसके बावजूद भी हमारे सांसदों के पास फुर्सत ही फुर्सत होती है. दरअसल, हमारे सांसद अपनी जिम्मेदारियों को गंभीरता से लेते ही नहीं. यही वजह है कि देश के लिए कानून बनाने और शिष्टाचार के मानदंड तय करने वाले सांसद संसद के अंदर कई बार गली-मुहल्लों से भी गया गुजरा बर्ताव करते हैं. हाल का ताजा उदाहरण दो सांसदों के बीच गाली गलौज व मारपीट की स्थिति भी आई जिससे स्पीकर तक को अति शर्मनाक कहना पड़ा था.

अमेरिकी दादागिरी के नमूने

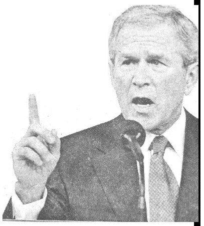

☞ १९६१-७५ के बीच के वियतनाम में अमेरिका की सैन्य दखलंदाजी और नापाम बम के इस्तेमाल ने लाखों नागरिको को मौत के घाट उतारा, वहीं ५८,००० से अधिक अमेरिकी सैनिको को भी अपनी कुर्बानी देनी पड़ी. इस युद्ध में अमेरिका के हाथ कुछ भी नहीं लगा.

☞ अक्टूबर १९६७ में चे ग्वेयेरा की हत्या के पीछे अमेरिका का ही हाथ था. अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी ने ही उनके बोलीबिआई हत्यारे सैनिक को प्रशिक्षित किया था और उन्हें हथियार मुहैया कराए थे.

☞ लीबियाई नेता कद्‌दाफी की लोकप्रियता से खीझे अमेरिकी प्रशासन ने आतंकियो के कथित सहयोगी होने की आड़ में १९८६ में लीबिया पर हवाई हमला बोला.

☞ १९८७ में फिजी में तिमोकी बबाद्रा के शासन के खिलाफ बगावत के पीछे सीआईए का हाथ बताया जाता है. बुश ने पनामा की आंतरिक स्थिति में हस्तक्षेप के लिए १९८८ में २६,००० अमेरिकी सैनिक भेजे. उस संघर्ष में हजारों पनामाई नागरिक बेमौत मारे गए.

☞ १९८८ तक अमेरिका ने कोलंबिया की आंतरिक राजनीति में भी दखल दिया और वहां राज्य प्रायोजित हिंसा का खुलकर समर्थन किया.

☞ क्यूबा में फिदेल कास्त्रों की सत्ता को अस्थिर करने

में विफल सीआईए पर आरोप है कि उसने क्यूबाई मूल के अमेरिकी आंतकी पोसाडा को संरक्षण दिया है, ताकि वह कास्त्रों समेत दिग्गज क्यूबाई नेताओं की हत्या कर सकें.

☞ वेनेजुएला में अपने विरोधी हयूगो शावेज की सत्ता को डिगाने में नाकामयाब अमेरिका ने उसके खिलाफ आंतकियों का हिमायती होने का आरोप जड़ प्रतिबंध लगाया.

☞ अबू गरेब जेल में कैदियों के साथ बर्बर व्यवहार ने अमेरिकी समाज और सत्ता प्रतिष्ठान के मानवाधिकारों की वकालत की कलई उतारी.

☞ २००३ में व्यापक नरसंहार के हथियारों के जखीरे को खत्म करने के नाम पर इराक पर हमला. लेकिन वहां से ऐसा कुछ भी बरामद नहीं हुआ.

☞ अब परमाणु अप्रसार संधि के उल्लंघन के आरोप में ईरान पर अमेरिका ने तीखे तेवर अपना लिए है. ईरानी राष्ट्रपति का तल्ख नजरिया उसकी रणनीति के मुफीद ही प्रतीत हो रहा है.

☞ नेपाल में राजशाही समर्थक रॉयल आर्मी के पास से वर्ष २००६ में अमेरिकी हथियारों के मिलने से लोकतंत्र के प्रति उसकी प्रतिबद्धता पर भी सवाल खड़ा हुआ हैं.

ठहरना चाहते मेहमान को जल्दी विदा कर देना और विदा चाहने वाले को रोकना समान रुप से आपत्तिजनक हैं. होमर

अगर किसी को कुछ देना चाहते हो तो उसके ओठों पर मुस्कराहट दे दो. **दाऊजी**

+++++++++++++++++

नायक या खलनायक का अंत

२८ अप्रैल १६३७ को इराक में जन्में सद्दाम हुसैन १६५६ में बाथ सोशलिस्ट पार्टी में शामिल हो गए. उसके दो साल के बाद हत्या के जुर्म में छह माह कैद की सजा मिली. १६६२ में इराक में विद्रोह किया तथा ब्रिगेडियर अब्दुल करीम ने सत्ता पर कब्जा किया. १६६८ में बाथ पार्टी के सत्ता पर कब्जा. सुरक्षा का भार संभाला. १६६८ में जनरल अहमद से मिलकर सत्ता हासिल की. १६७६ में राष्ट्रपति बने. एक साल बाद ईरान से जंग की घोषणा. १६८८ में कुर्द कस्बे हलबजा में रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल किया. १६६० में कुवैत पर हमला किया. १६६५ में राष्ट्रपति पद के लिए हुए जनमत संग्रह में ६६ फीसदी वोट लेकर भारी जीत दर्ज की.२००२ में जन संहारक हथियार रखने का आरोप लगा. यूएन निरीक्षकों ने जांच की. २००३ में अमेरिकी नेतृत्व वाली गंठबंधन का हमला. बगदाद पर कब्जा. १३ दिसम्बर २००३ को तिकरित से १० मील दूर अदवर से सद्दाम हुसैन को गिरफ्तार किया गया. ५ नवंबर २००६ को विशेष अदालत ने मौत की सजा सुनाई. २६ दिसम्बर २००६ को अपीली कोर्ट से तीस दिन में सजा पर अमल करने का निर्देश प्राप्त हुआ.

सद्दाम तानाशाह अवश्य थे, लेकिन उन्हेंाने मजहबी कट्टरपंथ की कभी हिमायत नहीं की. १६७३ में दुनिया में पैदा हुए तेल संकट में इराक ने अकुत धन कमाया और सद्दाम हुसैन ने सत्ता प्रमुख अल बक्र के साथ मिलकर इस धनराशि के सदुपयोग से अपने देशवासियों के जीवन स्तर को अरब जगत में सबसे बेहत्तर बनाया. इराक में औद्योगिकरण को सद्दाम ने नए आयाम दिए. सैन्य मजबूती की दिशा में भी उन्हेंाने ठोस कदम उठाए. शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में भी इस तानाशाह के शासनकाल में इराक नई बुलदियों पर पहुंचा. सद्दाम के विरोधी भी कबूल करते है कि इराक में स्वास्थ्य सेवाओं की हालत खाड़ी के दूसरे देशों से कहीं बेहतर रही है ओर बेशक इसका श्रेय सद्दाम को ही जाता है.

सद्दाम ने लोकतंत्र का गला घोटा. जिन्होंने इसका विरोध किया, उन्होंने उनकी हत्या करा दी. १६६६ में कुर्दो, शियाओं और तुर्को को इराक से बाहर निकलने का अमानवीय आदेश जारी किया. १६८० में ईरान के विरुद्ध युद्ध छेड़ा. आठ साल तक चले इस युद्ध में दोनों तरफ के लाखों लोग मारे गये. जुलाई १६८२ में अपने ऊपर आत्मघाती हमले का बदला लेने के लिए सद्दाम ने शिया बाहुल्य दुजैल गांव में १४८ लोगों की हत्या करा दी. आखिरकार यही घटना उनकी फांसी का सबब बनी. सद्दाम ने १६८८ में कुर्दिश कसबे हलाबजा पर अपनी नफरत का कहर बरपाया. कसबे पर रसायनिक हथियारों के हमले ने करीब पांच हजार नागरिकों को मौत की नींद सुला दी. अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में गिरावट के लिए कुवैत को दोषी मानते हुए १६६० में सद्दाम ने उस पर हमला बोल दिया. इससे दुनिया भर में उनके समर्थक देशों को भी धक्का लगा.

अर्द्ध कुम्भ पर विशेष

इलाहाबाद के ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल

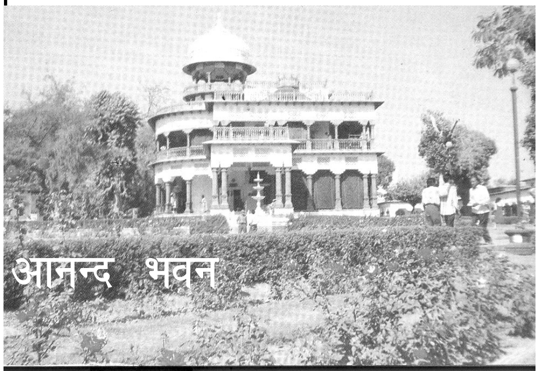

स्वराज भवन एवं आनन्द भवनः १८६६ में पं. मोतीलाल नेहरु ने चर्च लेन नामक मोहल्ले में एक अव्यवस्थित इमारत खरीदी. जब इस बंगले में नेहरु परिवार रहने के लिए आया तब इसका नाम आनन्द भवन रक्खा गया. १६२७ में इस बंगले के समीप खाली पड़ी जमीन पर एक इमारत का निर्माण नेहरु परिवार ने कराया तब इस नई इमारत का नाम आनन्द भवन रक्खा गया और नेहरु परिवार इस नई इमारत में निवास करने लगा तथा पूर्व आनन्द भवन को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को सौप दी गयी और उसका नाम बदलकर 'स्वराज भवन' रख दिया गया. १६३१ में पं० मोतीलाल नेहरु की मृत्यु के बाद उनके पुत्र जवाहर लाल नेहरु ने एक ट्रस्ट बना कर 'स्वराज भवन' को भारतीय जनता के ज्ञान के विकास, स्वास्थ्य एव सामाजिक आर्थिक उत्थान के लिए समर्पित कर दिया. इस इमारत के एक हिस्से में एक अस्पताल है (जो कमला नेहरु अस्पताल के नाम से जाना जाता है) था और शेष अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के उपयोग के लिए था. १६४८ से १६७४ तक इस इमारत का उपयोग बच्चों की शैक्षणिक गतिविधियों के विकास के लिए किया जाता रहा और इसमें एक बाल भवन की स्थापना की गयी. बाल भवन में गैर शैक्षिक यथा संगीत, विज्ञान, खेल एवं नाट्य आदि के विषय में बच्चों को सिखाया जाता था. १६७४ में स्व०प्रधानमंत्री इन्दिरा गॉधी ने जवाहरलाल मेमोरियल फण्ड बना कर यह इमारत २० वर्ष के लिए उसे पट्टे पर दे दी और उस इमारत में बाल भवन चलता रहा. किन्तु जब जवाहर बाल भवन को स्वराज भवन के ठीक बगल में स्थित एक अन्य मकान में स्थानान्तरित कर दिया गया तो स्वराज भवन को एक संग्रहालय के रुप में विकसित कर दिया गया.

स्वराज भवन एक बड़ा भवन है और भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दिनों का एक जीता जागता धरोहर हैं. इसी स्थान पर पं. जवाहर लाल नेहरु ने अपना बचपन बिताया था. यहीं से राजनीति की प्रारंभिक शिक्षा लेने के बाद भारतीय स्वाधीनता संग्राम में शामिल हुए. १६१६में पं० नेहरु का विवाह भी स्वराज भवन से ही हुआ था. १६१७ में उत्तर प्रदेश होम रूल लीग की स्थापना इसी स्वराज भवन में हुई थी. इस लीग के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरु एवं महामंत्री जवाहर लाल नेहरु थें. १६ नवम्बर १६१६ को इन्दिरा गांधी का जन्म भी इसी स्वराज भवन में हुआ था. १६२० में ऑल इण्डिया खिलाफत कमेटी की योजना इसी भवन में बनाई गई थी और स्वदेशी आन्दोलन १६२१ के दौरान विदेशी कपड़ों की होली भी यहॅा जलायी गयी थी. 'भारत की संविधान लिखने के लिए चुनी आल पार्टी कान्फ्रेंस का सम्मेलन भी इसी स्वराज भवन में हुआ था.

भारत के इतिहास की गाथा गाती यह ईमारत मौन रह कर भी बहुत कुछ

कह जाती है. यदि इसकी दीवारें बोल सकती तो निश्चय ही ये स्वाधीनता संग्राम की रोचक कथा कहती.

स्वराज भवन संग्रहालय प्रातः ६:३० से ५:३० तक खुला रहता है जिसमें १:०० से २:०० भोजनावकास व सोमवार को साप्ताहिक बन्दी रहती हैं.

२. आनन्द भवनः पं० मोतीलाल नेहरु द्वारा १६२६ में नींव रक्खी गयी इस इमारत में १६२७ में रहने के लिए आये. वास्तुकला की दृष्टि से यह भवन अपने आप में अनोखा हैं. यह एक दो मंजिल इमारत है तथा दक्षिण से उत्तर की ओर लम्बाई में फैली है. इस इमारत के एकदम उत्तरी छोर पर इसका प्रवेश द्वार है. यहॉ एक बड़ा कमरा है जो बैठक के तौर पर प्रयोग किया जाता है. शेष सभी कमरों के दरवाजे या तो पूर्व की ओर अथवा पश्चिम की ओर हैं. इस प्रकार से पूरे दिन किसी न किसी कमरे में प्रकाश आता रहात है.

आनन्द भवन भारतीय स्वाधीनता सघर्ष की एक ऐतिहासिक यादगार है और ब्रिटिश शासन के विरोध में किये गये अनेक विरोधों, कांग्रेस के अधिवेशनों एवं तत्कालीन राष्ट्रीय नेताओं के अनेक सम्मेलनों से इसका निकट सम्बंध रहा हैं.

साइमन कमीशन का विरोध, नेहरु रिपोर्ट, सिविल नाफरमानी आन्दोलन, गॉधी-इर्विन वार्ता के चुनाव में आनन्द भवन की मुख्य भूमिका रही थी. महात्मा गॉधी जब कभी इलाहाबाद आते थे तो यहीं रहते थे. आज भी यहॉ गांधी जी की अनेक वस्तुएं रक्खी हुई है. आनन्द भवन मात्र राजनैतिक विचार-विमर्श का केन्द्र ही नहीं, अपितु यह व्यक्तियों को राजनीति में प्रशिक्षित करने का भी केन्द्र था. खान अब्दुल गफ्फार खॉं, जे.बी.कपलानी. लाल बहादर शास्त्री. राम मनोहर लोहिया और फिरोज गांधी जैसे नेता जिन्होंने न मात्र स्वाधीनता संघर्ष में अपितु स्वाधीन भारत की राजनीति को नया मोड़ दिया, का प्रशिक्षण स्थल यही आनन्द भवन ही हैं.

१६४२ में इन्दिरा गॉधी का विवाह इसी भवन में हुआ और १६३८ में स्वरुप रानी (जवाहर लाल नेहरु की मॉ) की मृत्यु भी यहीं हुई.

१६७० में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस भवन को राष्ट्र को समर्पित कर दिया और इसके बाद इसे एक संग्रहालय का स्वरुप दे दिया गया. इसके खुलने का समय प्रातः ६:३० से सायं ५ बजे तक हैं. सोमवार को साप्ताहिक अवकाश व सरकारी अवकाशों एवं सभी राष्ट्रीय छुट्टियों के दिन बन्द रहता हैं.

उच्च न्यायालयः भारत के उच्च न्यायालयों में इलाहाबाद उच्च न्यायालय का अपना अलग स्थान हैं. इसकी स्थापना अंग्रेजी शासन काल में मार्च १८६६ ई० को हुई थी. प्रारम्भ में यह उत्तर पश्चिम राज्य का उच्च न्यायालय था और इसकी एक पीठ आगरा में स्थापित थी परन्तु १८६६ ई० में आगरा पीठ को इलाहाबाद में स्थानान्तरित कर दिया गया.

इलाहाबाद उच्च न्यायालय का भवन अत्यन्त शानदार और विस्तृत है. यहं वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है. यह न्याय का मन्दिर अपने सच्चे और निर्भिक न्याय के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध हैं. यह संसार का सर्वाधिक वृहत न्यायालय कहा जाता है.

४.अकबर का किलाः मध्यकालीन इतिहासकार बदायूनी के अनुसार १५७५ में सम्राट अकबर ने प्रयाग की यात्रा की और एक शाही शहर इलाहाबाद की स्थापना की. वस्तुतः अकबर पहला ऐसा मगल सम्राट था जिसने इलाहाबाद के सामाजिक महत्व को पहचाना. १५८० में अकबर ने अपने प्रदेशों का पुननिर्धारण किया और जौनपुर, कड़ा, मानिकपुर और बांधवगढ़ के कुछ क्षेत्रों को मिलाकर एक नयी प्रादेशिक इकाई इलाहाबादा का सूबा का गठन किया.

१५८३ में अकबर ने इलाहाबाद में गंगा और यमुना के संगम पर सैन्य एवं रिहायसी दोनों दृष्टियों को ध्यान में रखकर एक किले का निर्माण आरम्भ करवाया. यह किला चार हिस्सों में बनवाया गया. इसके पहले हिस्से में १२ भवन एवं कुछ बगीचे बनवाए गए. ये सब सम्राट के व्यक्तिगत उपयोग के लिए थे. दूसरे हिस्सें में बेगमों और शहजादियों के लिए महलों का निर्माण करवाया गया. तीसरा हिस्सा शाही परिवार से दूर के रिश्तोदारों, शाही परिचायकों और नौकरों के लिए बनवाया गया और चौथा हिस्सा सैनिकों और उनके साजो-समान के लिए बनवाया गया.

इस किले में ६३ महल, ३ ख्वाबगाह या झरोखा, २५ दरवाजें, २५ बाजें २७७ इमारतें, १७६ कोठियॉ ७७ तहखानें व २० अस्तबल, १ बाऊली और ५ कुएं हैं. इक आंकड़ों से किले की विशालता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है. इस किले के निर्माण में कुल २.५ करोड़ रुपये खर्च हुए और इसे पूर्ण होने में ४५ वर्ष लगे.

सामरिक दृष्टि से यह किला अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है. अंग्रेजों ने भी इस किले के सामरिक महत्व को पहचाना और १८५७ के विद्रोह को कुचलने के लिए इस किले ने अंग्रेजों की महती मदद की. आज यह किला भारतीय थल सेना के पूर्ण अधिकार में हैं. इसमें निर्बन्ध घमने फिरने की मनाही

है. कुछ हिस्सों में घूमने के लिए कमानडेण्ट आर्डिनेन्स डिपों, किला इलाहाबाद से अनुमति लेनी पड़ती हैं.

अशोक स्तम्भ:किले के प्रांगण में भारत के महान सम्राट का एक स्तम्भ स्थापित है. पालिसदार बलुआ पत्थर का बना यह स्तम्भ १०.६ मीटर ऊंचा है और इसे कौशाम्बी से लाकर यहॉ स्थापित किया गया है. इस स्तम्भ पर २३२ बी.सी. की तिथि अंकित है और इस पर अशोक के अभिलेख के साथ-साथ समुद्रगुप्त की प्रशस्ति भी उल्लिखित है जिसे समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिश्रेण ने लिखा है. मुगल काल में सम्राट जहॉगीर ने भी इस स्तम्भ पर अपना अभिलेख फारसी लिपि में उत्कीर्ण करवाया हैं.

खुसरोबाग: इलाहाबाद के बड़ी स्टेशन के पास स्थित खुसरो बाग मुगलकालीन इतिहास की एक अमिट धरोहर है. यह १७ बीघे के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है. यह चारों ओर मोटे-मोटे दीवारों से घिरा हुआ है. इसके चारों ओर एक-एक दरवाजा है. शहजादा सलीम अर्थात् जहॉगीर ने इसे अपना आरामगाह बनाया था. जहॉगीर के पुत्र खुसरों के नाम पर ही इसका नाम खुसरो बाग पड़ा.

इस बाग में तीन मकबरे हैं. पहला मकबरा शहजादा खुसरों का है. दूसरा मकबरा खुसरो की राजपूत मॉ शाह बेगम का है और तीसरा मकबरा खुसरो की बहन सुलतान निसार बेगम के लिए बनाया गया था, मगर उसको कहीं और दफना दिया गया था.

खुसरो बाग के अन्दर जानो का मुख्य द्वार अति विशाल है. इसमें अनेकों घोड़े की नालें लगी हुई है ऐसी मान्यता है कि अपने मालिक की जान बचाने में एक घोड़े ने इस विशाल दरवाजें की छलांग लगाई थी और अपने मालिक जान बचाई थी तभी से लोग बाग के अन्दर बने मकबरे में मन्नत मानते हैं और कार्य पूरा होने पर इसी दरवाजे में घोड़े की नाल लगवा देते हैं.

खुसरों बाग में अमरुद के कई बगीचे हैं. यहॉ अमरुदों को विदेशों में निर्यात किया जाता है. साथ ही वर्तमान में यहॉ पौधशाला है जिससे प्रतिवर्ष हजारों पौधों की बिक्री हेतु रखे व लगाए जाते हैं.

कम्पनी बाग: अंग्रेजों द्वारा शहर के बीचों-बीच बसाया गया यह एक अनोखा बाग है. शायद ही किसी शहर के बीचों के बीच इतना बड़ा पार्क मिलें. इसकी विशालता का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि इस बाग के अन्दर एक स्टेडियम, एक म्यूजियम, एक पुस्तकालय, मालवीय स्पोर्ट्स स्टेडियम, तीन नर्सरियॉ और गंगा नाथ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, प्रयाग संगीत समिति एवं हिन्दुस्तानी एकेडमी भी स्थित हैं.

विक्टोरिया मेमोरियल: कम्पनी बाग के बीचों-बीच सफेद संगमरमर का बना एक स्मारक है जो महारानी एलिजाबेथ की याद में बनवाया गया है. इस मेमोरियल के आस-पास के नितान्त सुन्दर पार्क है जो सदैव रही घास से ढका रहता है. इस पार्क में प्रति वर्ष पुष्प प्रदर्शनी, साग-भाजी प्रदर्शनी एवं डॉग शो का आयोजन किया जाता है. मई-जून की प्रचण्ड ग्रीष्म में यह स्थान एक शीतल ऐशगाह बन जाती हैं.

अल्फ्रेड पार्क (चद्रशेखर आजाद पार्क):जहॉ कम्पनी बाग एक शीतल ऐशगाह है वहीं स्वाधीनता संघर्ष के दौर की ब्रिटिश क्रूरता की गाथा भी कहता है. इसी बाग के भीतर वह स्थान है जहॉ अंग्रेजी सेना महान स्वाधीनता सेनानी चन्द्रशेखर आजाद को घेरा था और अन्त वे यहीं शहीद हो गये. यहीं पर उनका एक विशाल प्रतिमा भी हैं और वह पेड़ जिसकी ओट में वे गोली चलाये थे. पहले इस पार्क का नाम अल्फ्रेड पार्क था किनतु बाद में इसे बदल कर चन्द्रशेखर आजाद पार्क कर दिया गया

इलाहाबाद विश्वविद्यालय: पूर्व के ऑक्सफोर्ड के नाम से जाना जाने वाला इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना १८८७ ई० को सर एल्फ्रेड लायल की प्रेरणा से हुई थी. इस विश्वविद्यालय का नक्शा प्रसिद्ध वास्तुविद इमरसन ने बनाया था. इस विश्वविद्यालय की तथाकथित इमारत को बनवाने में १२ वर्ष लगे थे. वर्तमान में यह जहा स्थित है यहीं पर भारद्वाज मुनि का आश्रम हुआ करता था.

इस विश्वविद्यालय की शुरुआत १८७३ई० को लार्ड नार्थब्रुक द्वारा म्योर सेन्ट्रल कॉलेज (एमसीसी)की नीव रखकर की गई. एमसीसी में एक ऊँचा टावर तथा उसी के साथ लगा हुआ एक गोल गुम्बद है जिस पर इटैलियन टाइल्स लगी हुई है. इस इमारत का उद्घाटन तत्कालीन गवर्नर लार्ड डफरिन द्वारा किया गया था. आज इस इमारत को विज्ञान संकाय के रुप में जाना जाता है. इलाहाबाद विश्वविद्यालय का कला संकाय इस इमारत के लगभग १५० मी० की दूरी पर है. इस संकाय की प्रसिद्ध इमारत सीनेट हॉल है. यहॉ पर विशाल घंटाघर है जिसकी स्थापना लॉर्ड कैल्विन ने की थी. विश्वविद्यालय की प्रशासकीय कार्यालय एवं परीक्षा नियंत्रण केन्द्र तथा विभिन्न सूचनाओं से सम्बन्धित कार्यालय इसी भवन में स्थित हैं. इसी भवन में कुलपति कक्ष भी हैं. वर्तमान संप्रग सरकार ने इसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दे दिया है. इस

अद्धकुम्भ पर विशेष

परमात्मा के अंदर भूत, भविष्य और वर्तमान सभी हैं

हमारी आम रोज की भाषा अमरता की भाषा है. हम कभी पृथ्वीवासी होते हैं तो कभी स्वर्गवासी. जब हम अशरीरी होते हैं तो स्वर्ग में रहते हैं. कुछ लोगों का मत है कि जो व्यक्ति पृथ्वी पर अच्छा कार्य नहीं करता शरीर छोड़ने पर वह अशरीरी अवस्था में नरक में रहता है. कभी हम भौतिक जगत् में, कभी सूक्ष्म जगत् में कभी कारण जगत् में रहते हैं. हमारा अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता है. हम हमेशा चौदह भुवनों (सात पाताल व सात स्वर्ग) में कहीं न कहीं होते ही हैं. सभी यह सुनते हैं, जानते हैं लेकिन फिर भी हम मृत्यु से डरते हैं.

मृत्यु क्या है, अज्ञानता का नाम मृत्यु है. जब शरीर नहीं होती तो हम कहॉ होते हैं? अशरीरी स्थिति में अपनी स्थिति न देख पाने को हम मृत्यु कहते हैं. शरीरी व अशरीरी स्थिति में जब हमें अपने अस्तित्व का ज्ञान रहता है तब हम अपने को अमर कहते हैं. अमरता के ज्ञान से हम चिर-निर्भय होते हैं. पूर्ण निर्भय स्थिति की अनुभूति ही अहिंसा का दर्शन हैं.

क्या अमरता की अनुभूति संभव हैं? हॉ संभव है...... सभी पैगम्बरों (अवतारी आत्माओं) ने सभी को सिखाया है कि मनुष्य आत्मा विश्व व्यापी आत्मा है और अमर है, हम तपस्या के द्वारा इस स्थिति की अनुभूति कर सकते हैं. तपस्या क्या है? सत्य को समझना, सत्य के साथ एकाकार होना ही तपस्या हैं. सत्य, सत्य है, सनातन है, अमर हैं. तपस्या कैसे करें? लोग समझते हैं कि तपस्या का मतलब एक पैर पर खड़े रहना, असहनीय गर्मी व ठण्डक सहना, भूख लगने पर खाना न खाना, प्यास लगने पर पानी न पीना और अनेक प्रकार की शारीरिक वेदनाओं को सहना ही तपस्या हैं. परन्तु सुसंयोग है, और बहुत अच्छी बात है कि तपस्या का अर्थ घोर शारीरिक व मानसिक वेदना सहना नहीं हैं.

ऐसी क्रिया, ऐसा अनुशासन जो अपने बारे में जानकारी दे कि हम कौन हैं? और अपने बारे में ऐसा ज्ञान जो अनुभव करा दे कि हम और हमारे परमात्मा के बीच दूरी शून्य है, तप कहते हैं. इसी तप को महर्षि पतंजलि ने क्रियायोग कहा है-

तपः स्वाध्यायेश्वरः प्रणिधानानि क्रियायोगः।

पतंजलि योगदर्शनम्।।साधनपाद।। तप किस प्रकार किया जाये? इसे समझने के लिये कोई भी आध्यात्मिक ग्रंथ ले सकते हैं. अभी हम श्रीमद्भगवतगीत के प्रथम श्लोक के माध्यम से तप के बारे में समझें. धृतराष्ट्र उवाच्-

धर्मक्षेत्रें कुरूक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवैश्च किम् अकुर्वत संजयः।।

गीता के इस श्लोक को ध्यान से देखें. इसमें धृतराष्ट्र उवाच् तप हैं. धृतराष्ट्र द्वारा धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र के बारे में कहना तप हैं. धर्मक्षेत्र में-पाण्डव-पुत्र व धृतराष्ट्र पुत्रों का एकत्र होना तप हैं. कौरवों व पाण्डवों द्वारा धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र में युद्ध करना तप हैं. धृतराष्ट्र के द्वारा धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्र में हो रहे क्रियाकलाप की जानकारी लेना तप हैं. धृतराष्ट्र के द्वारा धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र में हो रहे क्रियाकलाप की जानकारी लेना तप हैं. धृतराष्ट्र व संजय का वार्तालाप तप है.

स्वामी श्री योगी सत्यम्

धृतराष्ट्र उवाच् समझने के लिए श्रीमद्भगवतगीता के मुख्य सिद्धात कि **'सबमें परमात्मा है और परमात्मा में सब है'** को समझना है.**'परमात्मा के अंदर भूत-भविष्य-वर्तमान सभी है'** को स्वीकारने से ही धृतराष्ट्र उवाच् समझा जा सकता है. परमात्मा सर्वव्यापी है, वे अपने अंदर व बाहर हर जगह हैं. जब तक परमात्मा की अनुभूति अपने अंदर नहीं हो जाती है तब तक परमात्मा को बाहर कहीं भी देखा नहीं जा सकता है. आइये स्वीकार करें कि परमात्मा अंदर हैं. जहॉ परमात्मा वहीं भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों हैं. अतः अपने अंतःकरण में पिछले द्वापरयुग (३१०० ई० पू० -७००ई०पू०) की सभी घटनायें भी होनी चाहिए.

अपने अंदर अंधा मन ही धृतराष्ट्र हैं. उवाच् उ व वाच् से मिलकर बना हैं. उ का अर्थ ऊपर से हैं. ऊपर का अर्थ ऐसे स्थान से हैं जहॉ से सब कुछ देखा जा सकता हैं. जिस स्थान पर पहॅुचने से भूत, भविष्य व वर्तमान के बीच की दूरी न दिखाई पड़ें, ऊपर का स्थान कहलाता हैं. भूत, वर्तमान और भविष्य के बीच दूरी खत्म होते ही हमें सर्वव्यापकता की अनुभूति होती है। इस अनुभूति को निर्विकल्प समाधि कहते है. ऊपर के स्थान पर मन को केन्द्रित करने की स्थिति धृतराष्ट्र-उ कहते हैं. वाच्-का अभिप्राय अभिव्यक्ति या बोलने से है. किसी भी चीज के विषय में अभिव्यक्ति को वाच् कहते हैं.

++++++++++++++++++++

अर्द्धकुम्भ पर विशेष

ॐरामचरित मानस दर्शन

✍दण्डी स्वामी अध्यात्म विद्यानन्द तीर्थ (मुनि जी महाराज)

सत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी सर्वप्रथम श्री गुरु की वंदना करते हैं:- वंदउँ गुरुपद पदुम परागा।

सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।
अमिअ मूरिमय चूरन चारु।
समन सकल भव रूज परिवारू।।
सुकृति संभु तन विमल विभूति।
मंजुल मंगल भोद प्रसूती।।
जन मन मंजुमुकुर मल हरनी।
किएँ तिलक गुन गन बस करनी।
श्री गुर पद नख मनि गज जोती।
सुमिरत दिव्य दृष्टिहिय होती।।
दलन मोह तम सो सप्राकासू।
बड़े भाग उर आवइ जासू।।
उधरहि विमल विनोचन हीके।
मिटही दोष दुख भव रजनी के।
सूझहि राम चरित मनि मानिक।
गुपुत प्रकट जहॅं जो जेहि खानिक।।
जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान।।
कौतुक देखहि सैल वन भूतल भूरि निधान।।१।।

मैं उन गुरु महाराज के चरण कमल की वंदना करता हूॅं, जो कृपा के समुद्र और नर रुप में श्री हरि ही हैं और जिनके वचन महामोह रूपी घने अन्धकार को नाश करने के लिए सूर्य किरणों के समूह हैं.

मैं गुरु महाराज के चरण कमलों की रज की वंदना करता हॅू जो सुरुचि सुगन्ध तथा अनुराग रुपी रस से परिपूर्ण हैं. वह अमर मूल का सुन्दर चूर्ण है और सम्पूर्ण भव रोगों के परिवार को नाश करने वाला हैं

वह रज सुकृति रूची शिव जी के शरीर पर सुशोभित निर्मल विभूति है और सुन्दर कल्याण और आनन्द की जननी हैं, भक्त के मनरुपी सुन्दर दर्पण के मैल को दूर करने वाली हैं. श्री गुरु महाराज चरण-नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान हैं, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है. वह प्रकाश अज्ञान रुपी अन्धकार का नाश करने वाला है, वह जिसके हृदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं.

उसके हृदय में आते ही हृदय के निर्मल नेत्र खुल जाते हैं और संसार रुपी रात्रि के दोष-दुःख मिट जाते है एवं श्री रामचरित रुपी मणि और माणिक्य, गुप्त और प्रकट जहॉ जो जिस खान में है, सब दिखाई पड़ने लगते हैं.

जैसे सिद्धाजन को नेत्रों में लगाकर साधकद्ध सिद्ध और सुजान पर्वतों, वनों और पृथ्वी के अन्दर कौतुक से ही बहुत सी खाने देखते हैं.

स वै सत्कर्मणां साक्षाद्द्विजातेरिह शम्भवः।
अद्योऽङ्गयत्राश्रमिणां यथाहं ज्ञानदो गुरुः।।
श्री मद्भा० १०-८०-३२।।

मित्र इस संसार में शरीर का कारण जन्मदाता माता-पिता प्रथम गुरु हैं. इसके बाद उपनयन-संस्कार करके सत्कर्मो की शिक्षा देने वाला दूसरा गुरु हैं. वह मेरे ही समान पूज्य है. तदन्तर ज्ञानोपदेश करके परमात्मा को प्राप्त कराने वाला गुरु तो मेरा स्वरुप ही हैं. वर्णाश्रमियों के ये तीन गुरु होते हैं. ऐसे ही गुरुओं की वंदना गोस्वामी जी ने की हैं. ऐसे ही गुरुओं से जनकल्याण संभव हैं. इस संबंध में श्रुति का कथन है-तस्मैं स विद्वानुपसन्नाय सम्यक

प्रशान्तचित्ताय समन्विताय।
येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं
प्रोवाच तां तत्वतो ब्रह्मविद्याम।
मु.२-१३।।

वह विद्वान गुरु अपने समीप आये हुए उस पूर्णतया शान्ति चित्त एवं जितेन्द्रिय शिष्य को उस ब्रह्म विद्या का तत्वतः उपदेश करे जिससे उस सत्य और अक्षर ऊँ पुरुष का ज्ञान होता हैं.

ऐसे ही गुरुओं से गुरु मंत्र तदनन्तर दीक्षा प्राप्त करने से मनुष्य भव सागर से पार हो जाता था.

गुशब्दस्त्वन्धकारः स्यात रु शब्दस्तंनिरोधकः।
अन्धकार निरोधित्वाद गुरु रित्यभिधीयते।।

गु-शब्द का अर्थ है अन्कार, रु-शब्द का अर्थ है अन्धकार(अज्ञान) काा निरोधा. अर्थात जा अन्धकार (अज्ञान) को हटाकर प्रकाश (ज्ञान) प्रदान करा दें, उसे ही सद्गुरु कहते हैं. गुरु मंत्रः मंत्र में दो अक्षर है-मन और त्र. अर्थात जिसके द्वारा मन का त्राण (निरोध) किया जाए उसे ही गुरु मंत्र कहते हैं.

जब मन इंद्रियां सम-दमादि से युक्त हो जाए तब गुरु से दीक्षा ग्रहण करनी चाहिए. तभी वह दीक्षा के योग्य होता है. दिव्य ज्ञानं यतो दद्यात्कुर्यात्पापस्य क्षायम। तस्माद्दीक्षेति सा प्रोक्ता मुनिभिस्तंत्र वैदिभिः।।

जिससे दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है और पापों का क्षय होता है उसे ही तत्त्वदर्शी मुनि जन दीक्षा कहते हैं.

दीक्षा मूलं जपं सर्व दीक्षा मूलं परं तपः। दीक्षा माश्रित्य निवसेद्सत्र मुत्राश्रमें वासन।।जप का मूल है दीक्षा, तप का मूल है दीक्षा.

देवि दीक्षा विहीनस्य न सिद्धिर्नच सद्गति।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन गुरुणादीक्षितो भवेद।।

हे देवि पार्वती-दीक्षा हीन को न सिद्धि मिलती है, न सद्गति. इसलिए प्रयत्नपूर्वक दीक्षा ग्रहण करनी चाहिए. ज्ञान से वाह्य गुरु मंत्र, दीक्षा तथा

अर्द्धकुम्भ पर विशेष

अन्य कर्म ज्ञान से निकृष्ट कर्म कहा गया है. अतः ज्ञान से युक्त गुरु मंत्र, दीक्षा तथा अन्य कर्म को करना श्रेयष्कर तथा कल्याण कारक है. अन्य नहीं. श्रुति कहती है-प्लावा ह्योते अदृदा यज्ञ रुपा, अष्टादशोक्तरवरं येषु कर्म।
एतच्छेयो येऽभिनन्दन्ति मूढ़ा
जरामृत्यु ते पुररेवापियन्ति।।मु.१-२७।

जिसमें ज्ञान बाह्य होने से निकृष्ट कर्म आश्रित कहा गया है वे अठारह यज्ञ रुप अस्थिर और नाशवान बताये गये हैं. जो मूढ़ यही श्रेय है इस प्रकार अभिनन्दन करते हैं वे फिर भी जरा मरण को प्राप्त होते रहते हैं.
अविद्यायाभन्तरे वर्तमानाः, स्वयं धीरा पण्डितं मन्यमानाः।जङ्घन्यमाना परियन्ति मूढ़ा, अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

अविद्या के मध्य में रहने वाले और अपने आपको बड़ा बुद्धिमान पण्डित मानने वाले वे मूढ़ पुरुष अंधे से ले जाये जाते हुए अंधे के समान पीड़ित होते सब ओर भटकते रहते हैं. गोस्वामी जी ऐसे गुरु और शिष्य को कहते हे-

अन्धे अन्धिय ठेलियॉ दोनों कूप परक्त।

अबोध वृत्ति के कारण वैदिक वर्णश्रमी व्यवस्था लुप्त हो गई. और उसके समाप्त होते ही चारों ओर अंधकार छा गया. लोग अपने पथ से भटक गये इससे सभी मनुष्य “श्रुति विरोध सब रत नर नारी” ही चरितार्थ होने लगा. कान फूँककर ही शिष्य को दीक्षित कर दिया जाने लगा. इससे न तो गुरु का कल्याण होता है और न शिष्य का.

यदि मनुष्य अपना, समाज का तथा राष्ट्र का हित और कल्याण चाहता है तो इस वैदिक परम्परा को पुर्नजीवित करना होगा. अविद्याग्रस्त वेषधारी गुरुओं के पीछे अन्धानुकरण से किसी का भी कल्याण होना सम्भव नहीं हैं.

मानस में प्रातः स्मरणीय संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा निरूपित गुरु की पराकाष्ठा संबंधी उपदेश को आज का समाज ग्रहण नहीं कर पा रहा हैं. इसका एकमात्र कारण है अज्ञान. कबीरदास जी कहते है-

फूटी ऑख विवेक की लखैन संत असंत।
जाके सॅघ दस बीस है सोइ कहावै महन्थ।।

लोगों की विवेक की ऑख फूट गई है जिस कारण से संत और असंत के भेद का ज्ञान नहीं होता. संत असंत का माप इतना ही रह गया है कि जिसके साथ चलने वाले बड़ संख्या में हो वही उसी को लोग संत औश्र गुरु मान लेते हैं.

यह कल्याण का मार्ग नहीं है. अतः यदि मनुष्य अपना और समाज का कल्याण करना चाहता है तो विवेक की ऑख से देखना होगा तथा गुरुडम वाद से ऊपर आना होगा. कहा भी है कि-**गुरू करै जान के और पानी पिये छान के।**

नव वर्ष शुभ हो

लो स्वर्ण किरण आई
जग का अंधियारा हरने,
सूने सोये से मन में
आशा की लाली भरने
फूलों ने खोल दिए हैं
अपने अलसाये लोचन
मुस्काएं किसलय कलियॉ
खिल-खिल कर हॅसता उपवन
उड़ चला गगन में खगकुल
नव स्वप्न क्षितिज को छूने,
जल सागर का लहराया
ली है अगड़ाई भू ने।
यह नए साल की वेला
सबमें परिवर्तन लाई,
खुश होकर हम भी झूमें
कहती फिरती पुरवाई।
मधुमास रहे जीवन में
मन हरियाता रहे हर्ष
पथ प्रगति का दिखलाता
मंगलमय हो नयाा वर्ष

सुरेश चन्द्र सर्वहारा, कोटा, राजस्थान

साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

१.पत्रिका के लिए लेख अथवा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजें. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. २. किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें. ३. पत्रिका के सदस्य पत्रव्यवहार व धनादेश भेजते समय सदस्य संख्या का उल्लेख अवश्य करें.४.हम साहित्यकारों को फिलहॉल कोई मानदेय नहीं देते. केवल उपहार स्वरूप दो प्रतियॉ ही भेजते हैं जिसमें उनकी रचनाएँ छपी होती हैं. भविष्य में कुछ मानदेय देने की योजना विचाराधीन हैं. लेकिन वह मांगी गयी सामग्री पर ही देय होगी. ५. यदि आप अपनी कृति (काव्य, ग़ज़ल, कहानी, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें. ६. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डी.डी ‘संपादक, विश्व स्नेह समाज’ के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

सेक्स सीडी और सियासत. . . .

१६७८ में तत्कालीन रक्षा मंत्री जगजीवन राम के बेटे सुरेश राम का दिल्ली के सत्यवती कॉलेज में पढ़ने वाली एक लड़की से विवाहेत्तर संबंधों को लेकर काफी हो हल्ला मचा. उनके द्वारा खींची गयी अपने अंतरंग क्षणो की फोटो मीडिया को लीक हो गई जिसे मेनका गांधी ने अपनी पत्रिका सुर्या में छापा था.

१६६५ में दिल्ली के यूथ कांग्रेस अध्यक्ष सुशील शर्मा ने अपनी २६ वर्षीय पत्नी नैना साहनी की हत्याकर लाा को अपने होटल के तंदूर मं जलाने का प्रयास किया. नैना साहनी के मतलूब करीम नामक व्यक्ति के साथ अवैध संबंध थे.

अगस्त २००२ में दिल्ली के पार्षद आत्माराम गुप्ता की हत्या का कारण भी विवाहेत्तर संबंधों की परिणति था. आत्माराम का एक और पार्षद शारदा जैन से अवैध संबंध थे. बाद में आत्माराम का झुकाव किसी अन्य महिला की तरफ हो गया. जिससे खिन्न शारदा जैन ने आत्माराम की हत्या करा दी. दिसम्बर २००६ में शारदा को उम्र कैद सजा मिली.

मई २००३ में उत्तर प्रदेश के लखनऊ में कवियत्री मधुमिता शुक्ला की हत्या कर दी गई. हत्या का कारण बाहुबली नेता अमरमणि त्रिपाठी से मधुमिता का अवैध संबंध बताया गया. ऐसी भी खबरें आई कि हत्या के समय मधुमिता गर्भवती थी.

दिसंबर २००४ में फिल्मों में काम मांगने आई नवोदित अभिनेत्री प्रीती जैन ने मधुर भंडारकर पर आरोप लगाया कि फिल्मों में काम देने का झांसा देकर मेरा यौन शोषण किया.

२००५ में एक निजी चैनल ने अपने स्टिंग आपरेशन में खुलासा किया कि फिल्मों में काम देने के बहाने शक्ति कपूर और अमन वर्मा ने अनैतिक मांग रखी. इससे पहले भी प्रसिद्ध फिल्म निर्माता एन.चंद्रा पर सुरभि नामक अभिनेत्री ने 'एक्सक्यूज मी' की आडिशन के दौरान इस तरह के आरोप लगाए थे.

दिसंबर २००५ में भोपाल के एक होटल में भाजपा के तत्कालीन जनरल सेक्रेटरी संजय जोशी की एक महिला के साथ अंतरंग सीडी ने तहलका मचाया. आरएसएस और बीजेपी की बड़ी किरकिरी हुई. जोशी को इस्तीफा देना पड़ा. हालांकि बाद में संजय जोशी को क्लीन चिद दे दी गई.

अगस्त २००६ में जम्मू में ऐसे सेक्स स्कैंडल का खुलासा हुआ जिसने कई पुलिस वाले, नौकरशाह और राजनेताओं को अपने फंदे में लपेटा.

कुछ विदेशी सेक्स स्कैंडल

अमेरिका पहले राष्ट्रपति रहे जार्ज वाशिंगटन के भी मैरी गिब्बन नाम की एक महिला से संबंध रहे. अमेरिकी राष्ट्रपति वारेन हार्डिंग का अपने दोस्त की बीबी के साथ लंबा अफेयर रहा और बाद में उनका उम्र में ३० वर्ष छोटी नैन ब्रिटन के साथ भी अफेयर रहा. १६५१ में केनेडी के एक ब्रिटिश अभिनेता की पत्नी एलोसा पुरडोम और मर्लिन मुनरो के साथ अंतरंग संबंध के इलजाम भी काफी चर्चित रहें. १६५६ में केनेडी पर जॉन लैडवर्ग नाम की महिला को गर्भपात के लिए तीन बार पैसा देने का मामला सामने आया. १६६८ में लेवेंस्की ने अमेरिका के उस समय राष्ट्रपति रहे बिल क्लिंटन पर यौन शोषण का आरोप लगाया और अदालत में जा पहुंचा. पूरी दुनिया में क्लिंटन-लेवेस्की के किस्से चटखारे ले लेकर सुने सुनाए गए. क्लिटन ने कोर्ट में शपथ लेकर आरोपों को गलत करार दिया जिससे मामला और उलझ गया. अमेरिका के सामने संवैधानिक संकट की स्थिति पैदा हो गई. मोनिका गेट के नाम से मशहूर हुए इस मामले में क्लिंटन को १६६८ में महाभियाग का सामना करना पड़ा था.

२००२ में एडविना क्यूरी नाम की एक महिला ने ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे जॉन मेजर के साथ चार साल तक संबंध रहने का दावा कर सबको सकते में डाल दिया.

दिसंबर २००३ ब्रिटेन के सांसद चेरिस ब्रायंट की समलैंगिक संबंधो के लिए जबरदस्त आलोचना हुई. इस स्कैंडल ने उनका पूरा राजनीतिक कैरियर चौपट कर दिया.

ब्रिटेन के गृहसचिव ५७ वर्षीय डेविड ब्लंकेट पर अपने से कम उम्र की महिला से संबंध का आरोप लगा. महिला के गर्भवती होने और मामले के तूल पकड़ने पर उन्हें पद छोड़ना पड़ा. ब्रिट्रेन के उपप्रधानमंत्री जॉन प्रेस्कॉट पर भी एक महिला नौकरशाह से अनैतिक संबंधो के आरोप लगाए गए. उन पर अप्रैल २००६ में एक बार फिर यौन शोषण का आरोप लगा.

अगस्त २००६ में इस्राइल के राष्ट्रपति मोशे कत्सेव पर उनके ही आफिस में काम करने वाली महिला कर्मचारी ने दबाब डालकर शारीरिक संबंध बनाने का आरोप लगाया.

जगन की कनिया

डी.पी.उपाध्याय ‘मगन मनि जी,सीएटीसी इलाहाबाद

गॉंव में जगन के बिना कोई काज, परोजन, समारोह इत्यादि संभव ही नहीं था। कभी भी कहीं भी किसी के यहॉं शादी विवाह या क्रिया तेरहवीं का भोज हो, एक मात्र भंडारी जगन। भंडारी खराब समझिए खाना खराब। खाद्‌य सामग्रियों को भंडार में सहेज कर रखना, नियन्त्रित ढंग से परोसने के लिए देना, कितने आदमी खा चूके, कितने अभी खाने बाकी है, का हिसाब रखना एवं कम पडी बस्तुओं को तुरन्त बनवा देने का उत्तरदायित्व जो निबाहे वह सफल भंडारी। भंडारी में एक और प्रमुख गुण होना चाहिए, उसे पसीने में तर बतर गर्मी में बन्द कमरे में कई घंटों तक रहने का अभ्यास होना चाहिए। भंडारी बनने के अतिरिक्त जगन, गॉव में काली पूजा, दुर्गा पूजा, होली,दसहरा आदि पूजा एवं त्योहारों के लिए चंदा उगाहना हो, गवनई गानें के लिए दल बटोरना हो, तो प्रथम व्यक्ति हुआ करते थे। जगन के लिए कोई भी अछूत एवं अपरिचित नहीं था। वे प्रत्येक भ्रातृ हीना बहन के लिए भाई तथा प्रत्येक निःसंतान दम्पति के लिए पुत्र थे। अस्तु जगन भाई निःसंदेह सबके चहेते एवं एक समाजोपयोगी व्यक्ति थे।

जगन के परिवार में केवल दो ही प्राणी थे, मिसिर मामा तथा जगन । जगन जब तीन साल के थे तभी उनके माता-पिता दोनों एक ही दिन हैजा में चल बसे तो उनके मामा जनक मिश्र जगन को संभालने के लिए आए और फिर यहीं बस गए। जगन के पास थोडी बहुत खेती बारी थी तथा जनक मिश्र भी कुवॉंरे थे, कोई लोग लरिका था नहीं, सो वे जगन के ही हो के रह गए। जनक मिश्र जगन के मामा थे अतः गॉव के सारे बच्चों के मामा हो गए। कालान्तर में जनक कहीं पीछे छूट गया तथा मिश्र का मिसिर हो गया और उसमें मामा जुड। गया। बच्चे, युवा, बष्द्ध लोग लुगाई सब उन्हें मिसिर मामा ही कहते थे। संभवतः उन्हे भी अपना असली नाम याद न हो।

शादी की उत्कट इच्छा रखने वाले तथा दुल्हन नाम मात्र से हुल्लसित हो जाने वाले जगन अड़तालिस साल के हो जाने तक कुवॉंरे है, इसका कारण भी अनुसंधान का विषय है। जगन बहुत पढ़े लिखे व्यक्ति तो थे नहीं, बस रामायण पढ़ लेते थे। अलबत्ता फगुआ गाने में उनकी कोई सानी नहीं थी। एक से बढ़कर एक गाली और कबीरा जोड़ा करते थे। एक बार कमर में ढोलक बॉंध ली तो पूरे दिन गड़गड़ाते रहते। यूँ तो सभी उन्हें चाहते थे, वे सभी के काम आते थे तथा अपनी थोड़ी क्षति करके भी औरो का कार्य संपन्न करने वाले जीव थे जगन। पर आज तक कोई ऐसी नहीं मिली जो इस भोले भाले व्यक्ति के मन की बात जान सके। गॉंव में खेत खलिहानों में कभी दो एक के साथ अपने मन की बात कहनी भी चाही तो उस अबला ने भैया कहकर अनायास ही उन्हें लजाने पर विवश कर दिया। एक गुलनी है जो यदा कदा कुछ देने से कई गुना सर्वदा लेकर उनहे मूर्ख बनाया करती है। जगन भी बस उसे एक नजर देखकर तृप्त हो जाते है। फिर वह चाहे पसेरी भर अनाज मॉंग ले या फिर पीले पर हरी छीट वाली सारी।

एक सनातन पारिवारिक परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए, आज फिर मिसिर मामा और जगन में लाठी चली है। मिसिर मामा अपना सिर पकड़े बैठे है। लाख संभालने के बाद भी लाठी छिटक कर सिर में लग ही गई। आलू जैसा फूल आया है। एक हाथ सिर पर तथा एक हाथ लाठी पर रखकर जगन के लिए किस्म किस्म की गालियों के वाकबाण हवा में छोड़ रहे है तथा जगन का सिर फुलौरा जैसा फुलाने में असफल रहने की स्थिति में अपने पानी पीने को कुत्ते का पेसाब पीने का दर्जा दे रहें है। गॉव का कोई भी व्यक्ति उनके झगड़े में नहीं पड़ता था। सब किसी को मालूम था कि संध्या तक मामा स्वयं जगत को खोजन के लिए निकलेंगे। यह उनकी दिनचर्या थी। बात बहुत धीरे-धीरे शुरू होती थी तथा अति साधारण बात पर लाठी चल जाना आम बात थी। झगड़े का कारण चनचन चमाइन जो मिसिर की मुह बोली थी, या गुलनी जो जगन को गुलर का फूल दिखाती रहती थी, या बैलों के नाद में पानी ज्यादा हो गया है, अथवा कउड़ भरने लायक सर्दी अभी नहीं है आदि कुछ भी हो सकता था।

मामा खेत की सोहनी करा रहें हैं। मक्के की सोहनी तथा मामा के पैसा गिनने का कार्य प्रायः एक साथ होता था। मामा कुछ विशेष अंदाज में बठते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि मामा मात्र पैसा गिनने में तल्लीन है तथा वे इस बात से पूर्णतया अनभिज्ञ है कि उनका एक अंग विशेष अन्य उपस्थित जन समुदाय के दर्शनार्थ उपलब्ध है। कई बार खुरपी की मार भी खा चूके हैं। जगन मकई का लावा तथा गुड़ पनिपिआव लेकर पहुँचा है। भंसार में भुजवाने में देर हो गयी। वह जल्दी ही लौट जाना चाहता है। परती वाले

मंदिर में सबेरे से एक औरत बैठी है तथा रो रही है, बेचू ने जगन को बताया है।

बेचू जगन का मित्र था। यह मित्रता एक दूसरे से प्राप्त होने वाले लाभ पर आधारित थी जिसमें बेचू बाजी मार लेते थे। बेचू का असली नाम राम कष्पाल दूबे था। गॉव के बाहर दूसरे गॉव के लोग उनहे दूबे जी भी कहते थे। ऐसा प्रायः देखने में आता है कि अपने गॉव की अपेक्षा अन्य गॉवों में लोगों की प्रतिष्ठा कुछ अधिक होती है क्योंकि अन्य गॉव वालों को व्यक्ति विशेष की बहुत सी बुराइयों का ज्ञान नहीं रहता हैं। अस्तु आन गॉव में दूबे की उनके कथनानुसार प्रतिष्ठा थी, जिसे वे बात बात में उजागर किया करते थे । गॉव में तो बेचू ही थे। दूबे जी जब अपना बपौती खेत बेचने लगे तथा जब उनमें एक सफल बिक्रेता के सारे गुण आ गये तो वे बेचू नाम से प्रसिद्व हो गए। सफल बिक्रेता का प्रमाण मात्र इतना से ही दिया जा सकता है कि वे एक खेत दो-दो तीन-तीन व्यक्तियों को बेचकर पैसा हजम कर चूके हैं तथा खरीदने वाले घंटा हिला रहें हैं। क्या करा दोगे जेल या फॉसी ? दूबे जी इससे डरने वाले नहीं। एक के पैसे से मुकदमा लड़ेंगे, दो के पैसे का फिर भी मुनाफा है।

जगन के भोले मन के कोने में कहीं यह आशा थी कि यदि बेचू चाहे तो उसकी बात बन सकती है और उसका भी ब्याह हो सकता है। बेचू दूबे भी अनेको बार अपने दूर की रिस्तेदार औरत जो जवान तथा विधवा है, या जिसका पति परदेश जाकर बहुत दिनों से उसे भूल गया है, के बारे में जगन से बातें करके अपना छोटा मोटा काम निकाल लिया करते थे। दूबे जी इसी तरह के कार्यो को करके बहु धंधी व्यक्तियों की श्रेणी में आया करते थे। शुरु शुरु में वे गवनई गाया करते थे, फिर गाय भैसो की फेरहाई करने लगे। गाहे ब गाहे कलकत्ता जाकर नौकरी भी कर आते है। दूबे जी औसत कद के आदमी है, पूरे सिरकिटिनी-दूबले व्यक्ति की परिभाषा है। अलबत्ता उनकी मूछें उनके डील डौल के अनुपात में कुछ ज्यादा ही बड़ी एवं घनी है। प्रतिष्ठित कहलाने के लिए दूबे जी धनवान होना आवश्यक नहीं समझते। जेब में चाहे एक धेला न हो, परन्तु तन पर चमाचम कपड़े है तो दूबे के विचार में वह व्यक्ति प्रतिष्ठित है। इसके लिए दूबे जी एक जोड़ी धोती-कुर्ता तथा एक मलमल का साफा आइरन न मिले तो लोटे से भी इस्तरी करके पहना करते थे जब भी वे अपने गॉव से आन गॉव जाते थे। घर पर वे एक फटी गमछी तथा एक फटी बनियान से ही काम चला लेते थे। कभी कभी तो फटी बनियान कुर्ते के भीतर से झॉक कर उनकी असलियत को बड़ी चतुराई से जग जाहिर कर दिया करती थी।

कुछ घंटा व्यतीत होते ही वह दुखियारी स्त्री मन्दिर के पुजारी साधू को अप्रिय लगने लगी। पहले तो साधू ने सामान्य रुप से समझाया कि यहॉं तुम्हें ठौर नहीं मिलने वाला, कहीं और जा कर शरण लो। वह अबला गुम सुम बनी रही, रोती रही। साघू भी उस स्त्री को कैसे मन्दिर पर रखले, कहॉ से उसे खिलायंगे। परती वाले मंदिर में पुजा करने वाले भी तो यदा कदा ही आते है। आते भी है, तो केवल शिवजीपर एक लोटा जल चढ़ाने वाले। पानी पीकर साधू कितनों को खिलाये। कुछ चढ़ावा आये तो अपने भी भोग लगे और ठाकुर जी को भी भोग लगाये। जब कभी त्योहार इत्यादि आते है, तब कुछ चढ़ावा चढ़ जाता है, कुछ खलिहानों में ठाकुर जी के लिए मिल जाता है तो मन्दिर में भगवान को भोग लगता है। मन्दिर में ठाकुर जी को भोग लगाने की प्रक्रिया भी अत्यन्त व्यवहारिक थी। जब साधू को भूख लगती तो खाना बनाते है, एक रोटी ठाकुर जी के सामने रखते, दूर से ही पानी फेंकते तथा मंत्र की जगह खाना है तो खालो नहीं तो हम तो चले खाने कहकर खाना शुरु कर देते। लग गया भगवान को भोग । भला इस व्यवस्था में वे इस औरत के भार को मंदिर पर कैसे सहन करते। इसलिए उस औरत को रास्ता नापने को कह रहे थे।

बेचू दूबे महाजन के यहॉ से आधा किलो टिकरी जगन से खरीदवाकर मन्दिर में पहुँचे है। ठाकुर जी को भोग लगाये साधू जी। बेचू दूबे बोले। क्या लाये हो दूबे? टिकरी। कहीं कोई गड़ा धन मिला है क्या, कभी तो भूले से भी मन्दिर नहीं आते। आज क्या बात है। जगन थोड़ा पीछे है।वह प्रयास कर रहा है उस औरत को देखने का। उसे इस वार्तालाप से कुछ लेना नहीं है। अलबत्ता यह जरुर सोच रहा है कि पॉच रुपये मेरे खर्च करा दिया बेचू ने और मन्दिर में कहीं औरत दिखाई नहीं दे रही। लो दूबे प्रसाद बांटो। साधू बोले। और कोई है मन्दिर में बाबा। हॉ है, उधर पिछवाड़े पेड़ के नीचे एक ऑरत बैठी है कहीं की दुःखियारी जान पड़ती है।

जिसे औरत कहा था साधू ने वह एक तीस वर्षीया युवती थी। नैन नक्श तीखे, गोल चेहरा, नकुली नाक, दोनों होठों की मोटाई सुन्दर अनुपान में, अच्छी लम्बाई, सुन्दर छींट की साड़ी के पल्लू से सरको ढके हुए किसी भले

घर की बहू लगती थी। रंग थोड़ा सांवला था। देह के गठन मोटाई और लम्बाई में संतुलित था। शरीर स्वस्थ था। अतः सावलापन यहॉ दोष न होकर सुन्दरता को वृद्धि प्रदान करने के कारण गुण प्रतीत हो रहा है। गौरांग यदि कृशकाय हो तो कहो भला कब शोभनीय लगता है। स्वस्थ मांसल शरीर की सांवली छवि भी अद्वितीय होती है। जगन उस युवती पर से अपनी दृष्टि हटाने में अपने को असमर्थ पारहा है। वस्तुतः वह शरीर से ही वहॉ था, मन से नहीं।

जगन याद करता है कब उसे एक पत्नी की कमी तथा उसकी जरुरत महसूस नहीं हुई। जब-जब जगन खाना तैयार करने की प्रथम प्रक्रिया बर्तन धोना तथा लकड़ी सुलगाने की झंझट से मुक्ति पाने के लिए दिन में दस बजे ही सत्तू खाकर संतोष किया है तब तब उसे पत्नी की याद आयी है। अब तो थोड़ा कम परन्तु जवानी के दिनों में प्रायः विस्तर पर पड़ते ही पत्नी की तीव्र इच्छा को दबाने हेतु वह अनेकों बार पेट के बल होकर अपने शरीर को दबा कर सो गया है। दुनिया चाहे जो भी समझे लेकिन जगन की आत्मा जानती है कि जगन ने आज तक वस्त्र के अंदर की औरत को नहीं देखा है। औरत तो जगन के लिए सदा ही मृगमरीचिका रही है। जब भी वह औरत के समीप पहुंचा हुआ अपने को अनुभव किया है। औरत उसे अभी बहुत दूर दिखाई पड़ी है। जगन का शरीर और मन अभी तक स्त्री भोग से अनभिज्ञ है, अपरिचित है।

बेचू ने मदिर के पिछवाड़े जा कर उस औरत को भी प्रसाद दिया तथा सहानुभूतिपुर्ण बार्तालाप से यह जानकारी भी प्राप्त कर ली कि यह औरत अपने पति के दुःखों से आजीज आकर अपना घर छोड़ दी है। मन्दिर के अतिरिक्त इसे कहीं ठौर नहीं है। चलो अब चलें। अधिक समय तक यहॉ रहोगे तो यहॉ जमघट लग जाएगी और बात बिगड़ जाएगी। यह औरत तो इसी मन्दिर में ही रहेगी। दूबे ने जगन का हाथ दबाते हुए धीरे से कहा और लगभग घसीटते हुए वहॉ से अलग लाया। जगन वहॉ से हटना नहीं चाहता था।

जगन रात भर करवटे ही बदलता रह गया। भोर में आखिर जीनव द्रव्य बहाने को विवश करके ही नींद आयी। जगन को धैर्य कहां था। सुबह नींद खुलते ही दूबे की प्रतीक्षा किये विना ही मन्दिर पहॅुच गया। बाबा सब समझ गये। बिना प्रश्न किए ही उत्तर दे दिया। वह चली गयी। कल तुम्हारे मन्दिर छोड़ने के पश्चात उसका पति उसे ढूढते हुए आया था। औरत को बहुत समझाया तथा उसके चरित्र पर शक न करने का वचन देकर प्यार जताया। पुनः न मारने की प्रतिज्ञा की तथा उसे लेकर वह अन्यत्र कहीं रहेगा का विश्वास दिलाया। औरत रो रही थी। पति की बातों का उस पर प्रभाव तो पड़ रहा था, परन्तु पति पर अविश्वास जो गत अनेक वर्षो में पैदा हुआ है, के कारण धीरज नहीं रख पा रही थी।

विचित्र है यह संसार और संसार के लोग। हम बेटियों को सास-ससुर की सेवा का पाठ पढ़ाकर ससुराल भेजते हैं। वहॉ सेवा का परिणाम दुश्चरित्र का लॉक्षन और डंडे तथा घूसों के मार के रुप में प्राप्त होता है। शंका ने कितने घरों को बर्बाद किया है। शंका सदा ही निराधार होती है। आधार मिले तो विश्वास न बन जाए।

बेचू जगन के घर गया था। उसे अनुपस्थित पाकर बेचू को अपना गन्तव्य दिशा निर्धारित करने में देरी नहीं लगी। रास्ते में ही जगन से मुलाकात हो गयी। वह चली गयी। जगन ने कातर स्वर में बोला। चली गयी ! बेचू भी आश्चर्य प्रकट करके बुदबुदाया। बेचू भैया कुछ उपाय करके मेरा अब विवाह करा दो। जगन पूर्ण समर्पण के साथ लगभग प्रार्थना के भाव में बोला। अपनी अवस्था देखी है। सम्भाल सकोगे। क्यों अपनी बुढ़ौती बिगाड़ना चाहते हो। बेचू ने समझाया। जगन पर तो स्त्री का भूत सवार था। बोला, चाहे जितना खर्च लगे। कहीं से खरीदकर भी लाओ। मित्र मेरी हालत तरस खाओ। अधीर होकर जगन ने अपनी चीर अभिलाषा बेचू से व्यक्त कर दी। नारी मोह अद्भूत होता है भाई। बेचू दूबे सोचते है मूर्ख के पास धन है तो चतुर खाये बिना क्यों मरे।

अत्यन्त अल्प समय में ही पूरे गॉव यह बात आग तरह फैल गयी कि जगन की आज शादी हो रही है। कनिया आ गयी है। बेचू दूबे अगुआ है।

एक मुॅह से सबने कहा अच्छा हो रहा है। बेचारे का घर बस जायेगा। कितना दुःख झेलते है जगन और मामा। और देर से ही सही इस खानदान को भी बारिस तो मिल जायेगा। गॉव का प्रत्येक व्यक्ति उत्साहित है, मानों यह उसके अपने बेटे, भाई की ही शादी हो। जिसमें जितना सामर्थ्य है, तन-मन-धन से सहयोग करने को तैयार है। जगन को कोई व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं है। सब लोग बिना पूछे ही काम कर रहे है। कनिया चॅूकी जगन के घर ही आयी थी अतः जगन के ऑगन में ही माड़ो गाड़ा गया। साधू ने बॉस निःशुल्क प्रदान किए। कोई पारिश्रमिक नहीं मांग रहा था। स्वचालित ढंग से सब

काम होरहा था। मंगल गीत गाये जाने लगे। हल्दी लगा, मातष्-पूजन हुआ। दुल्हा बन ठन कर तैयार हुए परछावन के लिए। पालकी उपलब्ध थी। कोई कहार नहीं था। युवक मंगल दल के युवकों ने यह उत्तरदायित्व संभाला। आखिर उनके जगन भैया की शादी थी। दुल्हा घर से पालकी पर सवार हो परछावन के लिए निकला। गॉव के बाहर परछावन हुई और दुल्हा पुनः घर पर आ गया। जगन के घर पर ही जगन की बारात लगी। बारात का स्वागत हुआ। शुभ मुहुर्त में विवाह सम्पन्न हुआ। गॉव भर के लोगों ने छक कर भोजन किया। मंगल गारी भी गायी गयी। पूरी रात विवाह सम्पन्न कराने में व्यतीत हो गयी।

जगन पियरी पहनें पैर को महावर से रंगाये अपने में ही मगन बैठे है। उनके हम उमरिया उनसे चिहुल-वाजी कर रहे हें। मिलन की रात विशेष रात होती है भैया। जीवन में एक बार ही आती है, कहीं से कमतर न पड़ना। आज के कमजोर पड़े बाकी जीवन भर कमजोर ही रहोगे। जगन शरमा जाते है, चेहरा लाल हो जा रहा है। मन में आज खुशी समा नहीं रही। मन में कई तरह के विचार उठने लगते है। होठों पर एक मुस्कान ठहर जाती है।

वह चिर अभिलाषित समय भी आया।जगन की मधुयामिनी, प्रिया मिलन की रात। एक पुरानी चारपाई, उस पर पुराना तोसक, तोसक पर एक नयी चादर पड़ी है। दुल्हन नीचे चटाई पर जगन उपर चारपाई पर बैठे दुल्हन को अपने पास बुला रहे हैं। दुल्हन कुछ ज्यादा ही लजा रही है। जगन अनाड़ी है। अतः जोर जबरदस्ती नहीं कर रहे है। दुल्हन भी केवल हां ना में ही जवाब दे रही है। एक बार साहस करके उसे उठाया तथा चारपाई पर बैठाया। दुल्हन पुनः चारपाई से उतरने लगी तो उसको रोकने के लिए पकड़ने के प्रयास में उसको हाथोंसे कुछ छू गया। विदेशिया नाच के लौडे की याद ताजा हो गयी। मान मनौवल में ही रात बीत गयी। चिर इच्छा अधूरी रही।

जगन दिन भर जो अप्राप्य रहा है उसको प्राप्त करने के उपाय सोचता रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उनकी दुल्हन इतना शरमाती क्यो हैं। उसके मित्रों ने समझाया। शरमायेगी नहीं तो कया बेहयपन दिखायेगी। इस अवसर पर स्त्रियां चाहत भरे मन पर से लज्जा रुपी आवरण को नहीं हटा पाती है। पुरुष को ही पहल करनी पड़ती है। जगन ने मन ही मन कुछ निश्चय किया।

प्रसन्नचित्त कम, सशंकित अधिक मन से जगन ने प्रिया मिलन कक्ष में प्रवेश किया। प्रिया से प्रणय-आग्रह किया। पत्नी में कुछ उदारता के लक्षण भी प्रतीत हुए क्योंकि वह उसे अपने पार्श्व में बैठाने में सफल हो गया। कुछ आगे बढ़ने की प्रक्रिया के मध्य 'महीना' शब्द जगन के हाथों को वहीं रोक दिये। वह अपने दुर्भाग्य पर पुनः झुझला उठा। न चाहते हुए भी प्रिया निवेदन पर दूध पिया और एक गहरी निद्रा के आगोश में चला गया।

सवेरे लोगों ने सुना कि जगन की कनिया सभी गहने और कपड़े लेकर भाग गयी। जगन सोएही रह गए। दबे मुंह यह भी सुना गया कि शायद वह 'किन्नर' थी या था। जगन इस बज्राघात पर बेचू दूबे के लिए गालियों का मलहम लगाते हुए सिर पकड़ कर बैठे है। सोचते है पन्द्रह हजार रुपये अपने कुल जमा पॉच विघा खेत रेहन रखकर कर्ज लिया है। अब क्या होगा। मामा को कौन समझाएगा। एक अदद नारी मोह ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। भिखारी बना दिया।

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठको, हम अगले अंक से एक स्तम्भ प्रारम्भ करने जा रहे हैं जिसमें जापानी भाषा के वर्णाक्षरों से लेकर बोलचाल तक की जानकारी समाहित होगी. इसे जापानी भाषा की कई पुस्तकों को हिंदी में अनुवाद कर चुकी सुप्रसिद्ध हिन्दी व जापानी लेखिका डॉ. श्रीमती राज बुद्धिराजा के द्वारा प्रदान किया जाएगा.

मूल्य वृद्धि सूचना

प्रिय सम्मानित पाठकों

इस वर्ष लगातार हो रही कागज मूल्य में वृद्धि को देखते हुए न चाहते हुए भी पत्रिका के मूल्य में वृद्धि करने को मजबूर हो रहे हैं. आशा है आप सभी सुधी पाठकों का स्नेह हमेशा की तरह आगे भी मिलता रहेगा. एक प्रतिः ५/-रु० वार्षिकः ६०/-रु०
द्विवार्षिकः१००/-रु० विशिष्ट सदस्यः१११/रु० आजीवनः११००/रु०

आवश्यकता है

हिन्दी मासिक **विश्व स्नेह समाज** हेतु भारत के विभिन्न क्षेत्रों मे *संवाददाता, ब्यूरो, एजेन्ट,विज्ञापन प्रतिनिधियों की.*

हिन्दी साप्ताहिक **द हंगामा इंडिया** हेतु उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों **संवाददाता, ब्यूरो, एजेन्ट, विज्ञापन प्रतिनिधि** कार्य करने के इच्छुक व्यक्ति जबाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को परियों की कहॉनी तो अच्छी लगती ही होगी. आइए इस बार पढ़े.
आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

चॉद वाली राजकुमारी

डॉ0 राजबुद्धिराजा

बहुत पुरानी बात है. एक बार चॉद पर रहने वाली राजकुमारी का मन धरती पर उतर आने के लिए मचलने लगा. धरती पर बहुत सुन्दर-सुन्दर पेड़, पहाड़, नदियां, झीलें व समुद्र थे. धरती पर सुन्दर-सुन्दर दयालु लोग भी रहते थे. इसीलिए राजकुमारी चाहती थी कि वह कुछ वक्त के लिए धरती पर रहे.

सबसे पहले वह बड़े शहर में गयी. छुक-छुक करती रेलगाड़ियों वाले शहरों में, लेकिन उसका मन वहां नहीं लगा. बाद में वह एक गांव में गयी. वह गॉव हरियाली से भरा-भरा था. खजूर, आम, जामुन के पेड़ थे और पीली सरसों वाले खेत भी. राजकुमारी ने सोचा कि कुछ दिन यहीं रहा जाए. उसने अपना रूप बदलकर छोटी बच्ची का रूप धारण कर लिया और आने-जाने वालों को चुपचाप देखने लगी.

इसी गांव मं गरीब पति-पत्नी रहा करते थे. उनके पास खाने-पीने को कुछ भी नहीं हुआ करता था. वे लोगों का सुख-दुःख बॉटते थे. बदले में उन्हें खाने पीने को कुछ न कुछ मिल जाया करता था. पूरा गॉव उन्हें भला आदमी कहता था. पर भलाई भी खाली पेट कब तक चलती. एक बार पत्नी ने अपने पति से कहा-कि गॉव से दूर जाकर तुम काम धंधा क्यों नहीं करते. 'तुम बिल्कुल ठीक कहती हो!' -पति ने कहा. वह रोटी कमाने के लिए गॉव चल पड़ा. चलते-चलते थोड़ी दूर आगे जाकर उसे हरियाली दिखाई दी. वह हरियाली बॉस का एक घना जंगल था.

"क्यों न बांस काटकर उनकी टोकरियां बना-बना कर बेची जाएं." भले आदमी ने मन ही मन सोचा. उसने पत्थर की सहायता से बॉस काटा और घसीट-घसीट कर किसी तरह घर ले आया. वह बॉस की टोकरी, गिलास, प्लेट, पंखा, कई तरह की चीजें बनाता, बाजार जाकर बेचता. जो कुछ भी मिल जाता उससे घर का सामान खरीदता. वह हफ्ते में एक बार बॉस के जंगल जाता, तीन-चार बॉस लाता, हफ्ते भर चीजें बनाता और बेचता. इस तरह से दोनों खुशी-खुशी रहने लगे.

एक दिन की बात हैं. जब वह बॉस काट रहा था तो उसे कुछ चमकता हुआ दिखाई दिया. ध्यान से देखने पर पता चला कि वह एक नन्हीं कन्या हैं. उसके शरीर से चॉदनी फूट रही थी. बॉस काटना भूल वह उस नन्हीं सी जान को घर ले आया.

पति-पत्नी बड़े प्यार से उसका पालन-पोषण करने लगे. जैसे-जैसे वह बड़ी होती गयी, उनके आंगन में चॉदनी फैलने लगी. गॉव भर के लोग उसकी खूबसूरती देखने आने लगे. उस कन्या के आ जाने से उन दोनों की किस्मत के सितारे भी चमकने लगे. कभी किसी बॉस में से सोने के सिक्के निकलते और कभी किसी बॉस में से चॉदी के सिक्के खनखनाते.

धीरे-धीरे वह घर फलता-फूलता गया और भले आदमी की गिनती रईसों में होने लगी. वह कन्या भी बड़ी होने लगी. उसकी खूबसूरती की चर्चा दूर-दूर तक फैलने लगी. उससे विवाह करने की बात शुरू होती वह किसी न किसी बहाने मना कर देती.

माता-पिता बहुत चिंतित थे. वे चाहते थे कि बेटी की शादी जल्दी हो जाए. राजकुमारी भी माता-पिता को दुःखी नहीं करना चाहती थी. उसने शादी के लिए एक शर्त रखी कि जो भी राजकुमार हीरे-चॉदी के फूल और सोने की डालियों वाला पेड़ ला सकेगा, वह उससे शादी कर लेगी. यह पेड़ केवल आसमान में ही हो सकता है. धरती पर इस तरह का पेड़ नहीं मिल सकता था, इसीलिए एक-एक करके सभी राजकुमारों ने उससे शादी की इच्छा छोड़ दी.

उनमें से एक राजकुमार ऐसा भी था जिसने हिम्मत नहीं हारी. उसने कुछ कारीगरों की बुलाया. उनसे हीरे-चॉदी के फूलों वाला सोने का पेड़ बनाने को कहा. पेड़ बनाने में तीन वर्ष लग गए. राजकुमार खुशी से फूला न समाया. उस पेड़ को लेकर खूबसूरत राजकुमारी के सामने हाजिर हुआ. राजकुमारी उसे देख ही रही थी कि घर के बाहर कुछ लोगों का शोर सुनाई पड़ा. पता चला कि सभी कारीगर पेड़ बनाने के मेहनताने की मांग कर रहे थे. यह जानकर राजकुमारी को बहुत धक्का लगा क्योंकि राजकुमार ने असली पेड़ न लाकर उसे छल-कपट से तैयार कराया था.

उसने सोचा कि अब वक्त आ गया है कि माता-पिता को अपनी असलियत बता दी जाए. धरती पर कब तक

सफल व्यक्तित्व

कोनकुप्पकट्टिल गोपीनाथन बालकृष्णन

२ मई १९४५ को एक दलित गरीब परिवार में केरल राज्य के कोट्टायम जिले के एक छोटे से गांव थलायोलापरंबू में जन्में ६१ वर्षीय के.जी.बालकृष्णन यानी कोनकुप्पकट्टिल गोपीनाथन बालकृष्णन १४ जनवरी २००७ को भारत के ३७वें प्रधान न्यायधीश का पद भार ग्रहण किया. आपका कार्यकाल १२ मई २०१० तक रहेगा.

आपके पूरे खानदान में केवल आपके पिता गोपीनाथन ही आपसे पहले मैट्रिक करने वाले व्यक्ति थे. आपके पिता न्यायिक सेवा में कार्यरत थे. आपकी माता सिर्फ सातवीं तक ही पढ़ी हुई थी. बालकृष्णन अपने आठ भाई-बहनों में दूसरे नंबर के थे. प्राइमरी शिक्षा के लिए इन्हें ५ किलोमीटर का सफय तय कर स्कूल जाना पड़ता था. सांइस से स्नातक होने के बाद आपने अनेक सामाजिक अवरोधों को तोड़ संघर्ष करके महाराजा लॉ कॉलेज से वकालत की पढाई की.

आपने १९६९ में केरल बार काउंसिल में एक एडवोकेट के रुप में अपना रजिस्ट्रेशन करा कर वकालत की दुनिया में व्यावहारिक रुप से कदम रक्खा. १९७० में आपने एलएलएम पूरा किया. १९७३ में आपने मुंसिफ के तौर पर केरल जूडिशियरी सर्विसेज ज्वाइन की. पर कुछ समय बाद वहां से इस्तीफा देकर केरल उच्च न्यायालय में वकालत की प्रेक्टिस शुरु कर दी. एक एडवोकेट के तौर पर आपने क्रिमिनल और सिविल केसेज दोनों ही डील किए हैं.

१९८५ में बालकृष्णन को केरल हाईकोर्ट का जज नियुक्त किया गया. फिर १९९७ में आपका गुजरात हाईकोर्ट तबादला हो गया. १९९८ में आपको गुजरात हाईकोर्ट का चीफ जस्टिस नियुक्त किया गया, फिर आपने १९९९ में मद्रास हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस का कार्यभार संभाला. सुप्रीम कोर्ट के जज के तौर पर ८ जून २००० को पहली बार शपथ ली.

आपको मानवतावादी न्यायाधीश के तौर पर जाना जाता है. आपने कई कड़े फैसले भी किए. राजनैतिक पार्टियों के रोजाना के हड़ताल-बंद आहवान जैसे कार्यक्रमों के खिलाफ रोक के लिए आपनें ही चुनाव आयुक्त को कहा था. आपने कहा कि इनसे आम-जनमानस को काफी तकलीफ पहुंचती हैं. दागी मंत्री और सीलिंग मामले में आपने सख्त रुख अपनाया. जनहित याचिकाओं की रचनात्मक भूमिका को प्रदूषित होने सा रोकना भी आपका ही निर्णय था. सभी राज्यों को पांचवी तक के विद्यार्थियों के लिए स्कूलों द्वारा मिड डे मिल देने का फैसला भी आपका ही था.

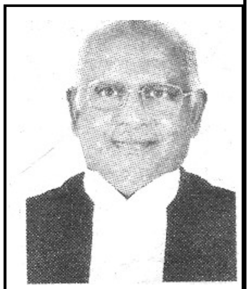

आप पूर्वनिर्णयों के मामले में एक सख्त कानूनविद् की तरह सही संवैधानिक शैली का प्रयोग करने वाले माने जाते हैं. उदाहरण के तौर पर पिछले साल आपने सुप्रीम कोर्ट की बैंच के बहुमत फैसले पर बेबाक रुप से असहमति जताई. साथ ही अपने एक फैसले में आपने गुटखें के संबंध में कहा-ईट डज नाट इनटाइटल सीटिजन्स टू कैरी आन ट्रेड आर बिजनेश इन एक्टीवीटिज हवीच ऑर इम्मारल एण्ड क्रिमिनल एण्ड इन गुड्स हवीच ऑर आब्नोक्शियस एण्ड इनजरियस टू हेल्थ, सेफ्टी एण्ड वेलफेयर ऑफ द जनरल पब्लिक. देयर कैन नॉट बी एनी बिजनेश इन क्राइम.

जेसिका लाल, प्रियदर्शिनी मट्टू और शिबू सोरेन सजा प्रकारण जैसे ऐतिहासिक फैसलों ने भारतीय युवाओं में न्याय के प्रति आस्था की जो अलख जलाई है, उसे न्यायपूर्ण निर्णयों के लिए जानी जाती इस शख्सीयत को कायम रखकर एक अनुपम उदाहरण पेश करना होगा.

++++++++++++++++++++++

चॉद वाली राजकुमारी का शेष..

...रहा जा सकता है. उसने भले माता-पिता से कहा-“मैं चांद लोक की राजकुमारी हूॅ. आपकी दया-ममता की खबर सुनकर मैं आपके पास रहने चली आई थी. अब पता चला कि धरती पर छली कपटी लोग रहते हैं. इसीलिए अब मैं अपने देश चली जाऊँगी. आपने मुझे जो प्यार और अपनापन दिया उसे मैं हमेशा याद रखूंगी.”

यह सुनकर माता-पिता फूट-फूट कर रोने लगे. पर अब क्या हो सकता था. इतने में आकाश से एक चमकदार वस्तु उतरती दिखाई दी. वह देवताओं का विमान था जिस पर सवार होकर राजकुमारी चॉद की ओर चली गई.

डॉ. राजबुद्धिराजा, के कहॉनी संग्रह मेरी श्रेष्ठ बाल कहॉनियो से

+++++++

रिक्शा चालक

देवेन्द्र कुमार मिश्रा, छिन्दवाड़ा,मप्र

दो दिन से भीषण बरसात हो रही थी. चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी. ऐसे में बंगले वाले तो सुरक्षित थे ही साथ ही मध्यमवर्गीय भी सीमेन्टेड मकानों में ठीक-ठाक थे. इतना तो उनके पास होता ही है कि दो चार दिन काम न भी करें तो बैठे-बैठें खा सकते थे लेकिन झोपड़ी में रहने वाले मजदूरो, गरीबों को क्या जो रोज कमा कर खाते थे और फिर भी पूरी भूख नहीं मिटा पाते थे. ऐसे में दो दिन घर में खाली बैठना पेट को भूख रहने का अभ्यास कराना ही था.

रुल्दू ने उन तमाम जगहों पर खाली बर्तन रख दिये जहॉ पर पानी टपक-टपक कर गिर रहा था. अब पानी टप-टपकर बर्तनों में गिरने लगा. मारे भूख के रुल्दू और उसकी बीबी का बुरा हाल था. जो थोड़ा बहुत था वो पकाकर मुन्नू को खिला दिया था. मुन्नू सो रहा था. जमीन पर. बादलों की गड़गड़ाहट वातावरण को कंपकपा देती थी. रुल्दू रिक्शा चलाता था. उसका रिक्शा बाहर पानी में खड़ा भीग रहा था. भूख की पीड़ा दोनों के चेहरे से झलक रही थी.

“ये पानी तो जान ही लेकर थमेगा”रुल्दू की बीबी जगनी ने कहा.

“पानी थमे तो कुछ कमाने निकलॅू” रुल्दू ने आहत भाव से कहा.

“दो दिन से भूखे हो. मुझसे तो देखा नहीं जाता. अब मुन्नू उठकर खाना मांगेगा तो क्या दूंगी उसे.” जगनी ने उदास होकर कहा.

“तू भी तो दो दिन से भूखी है.”

“मेरी छोड़ो मैं तो औरत हॅू.”

“तो क्या औरतों को भूख नहीं लगती हैं”

“औरतों में सहन करने की शक्ति होती है.” कहने को तो कह दिया पर असल में भूख से उसका दम निकला जा रहा था.

फिर दोनों ने एक-एक लोटा जल भरके पेट को तृप्त किया और जमीन पर बिछौना के नाम पर एक-एक लम्बा फटा-चिथा कपड़ा बिछाया और सोने की कोशिश करने लगे. रुल्दू थोड़ी देर बाद पानी से भरे बर्तनों में से पानी फेक देता और फिर उन्हें रख देता और पानी फिर टप-टपकर भरने लगा. दोनों पति-पत्नी सोने की कोशि करते मगर भूखे पेट नींद भी कहा आती है.

“नींद नहीं आ रही है” जगनी ने कहा

“तू भी तो जाग रही हैं.” जगनी ने जवाब न दिया. मुन्नू जाग गया. उसने मॉ से कहा-“मॉ भूख लगी हैं.”

“हॉ बेटा थोड़ी देर ठहर जा. फिर मिलेगा खाना.”

“कब मिलेगा मॉ.”

“जब तेरे बाबा कमाने जायेंगें.”

“बाबा कब कमाने जायेंगे मॉ”

“जब पानी रुकेगा”

“पानी कब रुकेगा मॉ.”

“जब भगवान चाहेगा” थोड़ी देर तो मुन्नू चुप रहा. फिर खाने की मॉग करने लगा.

“मॉ मुझे भूख लगी हैं.”

“ले थोड़ा सा पानी पी ले बेटा.”

“नहीं मुझे खाना चाहिए.”

मुन्नू जोर-जोर से रोने लगा. जगनी ने गुस्से में थप्पड़ रसीद कर दिया. फिर सीने से लगाकर मुन्नू को ले रोने लगी.

रुल्दू-“क्यों मार रही है बच्चे को.”

“तो रोटी कहां से लाकर दॅू.”

“मैं कुछ जुगाड़ करता हॅू.”

“ऐसे पानी में कहा जाओगे?”

“घर में बैठे भूखे मरने से अच्छा है कि कुछ हाथ-पॉव चलाऊ”

“भूखें हों कही चक्कर-वक्कर आ गया तो बैठे-बिठाये और मुसीबत हो जायेगी.”

“अब भूखे रहने से अच्छा है कि मुसीबत आ जाये पर भूख अब सहन नहीं होती. मैं खुद तो भूख रह भी लूं पर मुन्नू को भूखा नहीं देख सकता”

“पर इतनी बारिश में क्या कमाई होगी. उल्टे सर्दी अलग लग जायेगी. कपड़ें तो भीगेगी ही.”

“भगवान से प्रार्थना कर कि कोई सवारी मिल जाये.”रुल्दू ने रिक्शा लिया और तेज बारिश में बाजार की ओर चल दिया. ○

दिल से मांगी हुई दुआओं में असर होता है
प्यार से आसान ये जीवन का सफ़र होता है।

नया वर्ष

नया वर्ष ज्यों
नया चॉद सूरज
नया आलोक।
        नये गृह के
        द्वार पर खड़ा ज्यों
        तरु अशोक।
उल्लास बॉटो
आनन्द पर आज
न कोई रोक।
        प्रेम से भरा
        यह सारा जगत
        हमारा ओक।
छाती ऊपर
मसीहा के क्यों कील
रहे हो ठोक?

नलिनीकांत, अंडाल, पं.बंगाल

व्यंग्य १४ फरवरीः वेलेटाइन डे पर विशेष

जब प्रेम जगजाहिर हो जाए?

ब्रजगोपाल राय 'चंचल,

समस्या तो है ही, जब प्रेम का राज जगजाहिर हो जाए. सलाह तो सभी यह देते हैं और हम भी यहीं देंगे कि प्यार पलकों की छांव में, दिल के बंद कमरे में तब तक महफूज रहे, जब तक कि 'सही वक्त' यानी कि शादी कर लेने का मौका न आ जाए, प्यार को तो एक दिन जाहिर होना है ही, मगर बड़ी अजीब समस्याएं खड़ी हो जाती है, जब प्यार सही वक्त से पहले ही जाहिर हो जाए.

सवाल यह है कि तमाम छिपाने के बावजूद सही मौका आने से पहले ही अगर वह जाहिर हो जाए, तो क्या करें? प्यार जाहिर हो जाने पर जो समस्याएं अचानक सामने आ जाएं तो उन से कैसे निबटें? कैसे क्या करें कि प्यार, प्यार भी बना रहे और परेशानियां भी खत्म हो जाएं?

सबसे पहले तो अपने दिल को मजबूत करें, इतना मजबूत, जैसे वह स्टील का बना हुआ लगे. हाथपांव फूल रहे हों तो उन्हें फूलने से बचाएं. अगर आप प्रेमी हैं तो प्रेमिका को एक दर्जन रुमाल खरीद कर दें, ताकि वह रोरो कर अपनी आंखें आंसुओं से तरबतर न कर लें. उसे हिम्मत बंधाएं कि प्रेमियों की जिंदगी में तो ऐसे दुख आते ही रहते हैं.

वह प्यार ही क्या, जो इतने मामूली से झटके से टूट जाए या खत्म हो जाए? अपनी प्रेमिका को 'हीर', 'जूलियट', 'लैला' और 'शीरी' के उदारहण दें. उसे समझाएं कि इन आदर्श प्रेमिकाओं के जीवन में भी ऐसे ही तमाम दुख आए थे. प्यार करने वाले दो निर्दोष और मासूम प्रेमियों को यह जालिम जमाना कभी भी चैन से प्यार नहीं करने देता. प्रेमिका को एकाध फिल्मी संवाद भी सुनाएं. कुछ इस तरह से, "पुष्पा, ये जमाने रुसवाइयां हमें एकदूसरे से कभी जुदा नहीं कर सकती. मैं वह शख्स हूॅ, जो आसमान की छाती पर अपने प्यार की कहानी अपने लहू से लिख दूंगा. बस, इस नाजूक घड़ी, नाजुक वक्त में, मुझे तुम्हारा साथ चाहिए. तुम रोओगी, कमजोर पड़ोगी तो मेरा दिल भी टूट जाएगा."

इसी तरह अगर आप 'प्रेमिका' है तो बजाय छुईमुई की तरह सिकुड़नेसिमटने के, खुल कर मैदान में सामने आएं. रोना धानों बंद करें. अपने प्रेमी को ढ़ाढस बंधाएं, ताकि वह शादी के फंदे से भागने की हिम्मत न कर सकें. अपनी बातों और कसमेंवादों से उस की नाक में ऐसी नकेल डाल कर रखें, ताकि वह आप से हर हाल में शादी करने को तत्पर रहें.

याद रखें, प्रेमीगण सब कुछ बरदाश्त कर सकते हैं, लेकिन जालिम जमाना उस की माशूका पर अत्याचार करें, इसे कतई सहन नहीं कर सकते. इसलिए राज खुल जाने पर प्रेमी के सामने जब भी जाएं, रोनी सूरत बना कर जाएं. इस से आप के प्रेमी के भीतर का 'दारासिंह' जागेगा. उसे झूठेसच्चे किस्से गढ़ कर, खूब नमकमिर्च लगा कर, जोरजोर से रोते हुए सुनाएं कि किस तरह उस की सहेलियों ने उस की हंसी उड़ाई, किस तरह मां ने उसे डांटा, किस तरह पिता ने उस का घर से निकलना बंद करा दिया और किस तरह बड़े भैया ने उसे प्यार से समझाया कि वह 'उसे' भूल जाएं.

प्रेमी आप को इस परिस्थिति में हमेशा पुरानी फिल्मों के संवाद सुनाएगा, लेकिन आप उसे गैरफिल्मी संवाद सुनाएं, ताकि प्रेमी को लगे कि आप वाकई उस से बहुत प्यार करती हैं. संवाद कुछ इस तरह हो सकता है, "राकेश, मैं इस संघर्ष के हर कदम व हर मोरचे पर तुम्हारा साथ दूंगी. मुझे सिवा अपने पिता और कॉलिज के प्रिसिपल के, इस जमाने में किसी का डर नहीं हैं. पिताजी से अगर डर है तो सिर्फ इसलिए कि वह कहीं मुझे अपनी बातों से बहका कर उस बैंक अधिकारी से शादी करने के लिए तैयार न कर लें, जो तुम्हारे जैसा प्रिय और दिलेर तो नहीं है, लेकिन उसके पास अपनी कार जरुर हैं.

"प्रिंसिपल से डर इसलिए है कि

अगर उन्होंने तुम्हें कॉलिज से निकाल दिया (मुझे शायद ‘लड़की है, बच्ची है’ समझ कर न निकालें) तो तुम्हारा साल तो खराब हो ही जाएगा, घर से भाग कर शादी करने के इरादे पर भी पानी फिर जाएगा. तुम्हारे पास तकनिकी डिगरी भी नहीं होगी, इसलिए नौकरी भी मिलेगी. हे राकेश, उस अवस्था में क्या भेलपूरी खा कर कितने दिन गुजारेंगे और फिर हमारे बच्चों का क्या होगा?”

आप के ऐसे गैरफिल्मी संवाद से आप के प्रेमी का पौरुष जाग उठेगा. वह हर हालत में आप से विवाह करने के लिए तैयार हो जाएगा. जमाने से टकराने का हैसला उस में पैदा हो जाएगा. उस समय वह आप के कंधी पर हाथ रख कर ‘सब कुछ ठीक हो जाएगा पुष्पा,’ कह दे तो समझिए कि आप ने किला फतह कर लिया है. प्रेमी नाम का यह गरीब बंदा अब पके टमाटर की तरह आप की झोली में आ गिरा है. आज नहीं तो कल, वह आप से विवाह करके अवश्य ‘शहीद’ हो जाना चाहेगा.

प्यार का भांडा फूट जाने पर प्रेमी और प्रेमिकाओं के सामने सब से बड़ी समस्या आती है प्रिसिपल से निबटने की, क्योंकि प्यार के ज्यादातर ‘भांडे’ कॉलेज में ही फूॅटते हैं और प्रेमिका को तो कम, प्रेमी को सब से ज्यादा खतरा कॉलिज से निकाल दिए जाने का होता हैं.

ऐसी स्थिति में प्रिसिंपल प्रेमी को अपने कक्ष में बुला कर प्रायः बहुत ऊंचे आदर्शो की बातें समझाया करते हैं. आमतौर पर पहले डांटा जाता है कि य कॉलिज है या पिकनिक स्थल.

प्रेमी को प्रिसिपल की सारी बातें, मतलब उन का आदर्शवाद पर दिया गया २० मिनट का भाषण कॉलिज को ‘प्रेम करने का अड्डा’ बनाए जाने पर १० मिनट की डांट, कॉलिज से निकाल दिए जाने की ५ मिनट की धमकी, तुम्हारी यह उम्र प्यार करने की नहीं हैं’, ‘विषय पर ५ मिनट की ‘पुचकार’, आइंदा ऐसी वैसी हरकत करने पर अभिभावक को बताने की १ मिनट की ‘घुड़की’ तथा आइंदा उस लड़की से न मिलने का आधा मिनट का ‘आदेश’, सब कुछ सिर झुका कर, ‘जी सर, यस सर,’ कर कर सुन लेना चाहिए. प्रेमीगणों के चेहरे पर ऐसी अवस्था में प्रायः डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की तरह गंभीरता रहती है और सिर प्रायः ऐसे झुका रहता है, जैसे थानेदार के सामने जेबकतरे का झुका रहता हैं.

प्रेमिकाओं को भी प्रिसिपल प्रायः डांटते है, लेकिन बड़े प्यार से, प्रेमिकाओं का कर्त्तव्य है कि वे इस स्थिति में रोने की मुद्रा बनाएं और प्रिंसिपल के बोर भाषण को अपने आंसुओं में बहा दें. अगर प्रिसिंपल कुछ पूछने या बोलने के लिए मजबूर कर दें तो प्रेमिकांए इस ढंग से पेश आएं, जैसे सारी गलती बस ‘यों हीं’ हो गई और मजाकमजाक में लोगों ने बात का बतंगड़ बना दिया. अगर कुछ प्रेमपत्र वगैरह पकड़े गए हों तो उस के जवाब में ‘गलती हो गई, सर’ कह देने भर से काम चल जाता हैं.

प्रेमियों को तो नहीं, लेकिन प्रेमिकाओं को प्रायः घर पर डांट पड़ा करती है. प्रेमिका की मॉ प्रायः ‘मुझे अगर पता होता तो पैदा होते ही गला घेंट देती’ जैसा संवाद सुनाती है. बड़े भैया प्रेमी समेत अपनी बहन की टांग तोड़ देने की धमकी देते हैं और पिताजी ‘इसका पढ़ना लिखना बंद’ कह कर सब्जी लेने बाजार चले जाते हैं.

प्रेमिकाओं को यह सब कुछ धैर्य से सुनना चाहिए. इस के बाद धीरे-धीरे सब से पहले अपनी किसी मुंहबोली चाची, भाभी या ऐसी स्त्री से, जिस का कि मां से भी मिलनाजुलना हो, मिलें और फिर उसके जरिए अपने ‘प्रणय प्रसंग’ को धीरे-धीरे ‘सकारात्मक दिशा’ में पहुंचांए. किसी मुंहफट, चुलबुली सहेली के जरिए ऐसा माहौल बनाएं, जिस से माताश्री का क्रोध धीरे-धीरे कम हो और वह अंततः इसी चिंता में डूब जाएं कि कभी न कभी तो इस के ‘हाथ पीले’ करने ही है. ‘अगर लड़का ठीक है, तो फिर बुराई क्या है,’ जैसी भावना माताश्री के हृदय में प्रकट हो गई तो फिर काम फतह हुआ समझों. प्रेमियों को अपने पिता को समझाना बड़ा मुश्किल होता है. मातापिता प्रायः इस चक्कर में रहते हैं कि कोई ऐसी बहू मिले, जो फ्रिज, वीसीआर,रंगीन टीवी और संभव हो तो कार समेत घर आए. प्रेमी को चाहिए कि पिता के समक्ष आदर्शवाद की बातें न करें, बल्कि इस तरह समझाए कि यदि वैवाहिक कार्य दोनों पक्षों की मरजी से हुआ, तो धीरे-धीरे सभी साधन घर में आ जाएंगे. फिर उन की बहू अधिक नहीं तो नौकरी कर के घर के आधुनिकीकरण किए जाने की उस ३० वर्षीय महायोजना में जरूर सहयोग करेगी, जिसे स्वयं पिताजी अभी तक पूरा नहीं कर पाए हैं.

यदि बात बनती नजर न आ रही हो तो किसी ऐसे व्यक्ति का साथ लिया जा सकता है, जिसे पिताश्री सम्मान देते हों या प्यार करते हों, प्रायः ‘छोटे चाचा’ ऐसे मामलों में मददगार हुआ करते हैं.

हर प्रेमी को चाहिए कि अपने प्रणय प्रसंग के दौरान अपने ‘छोटे साले’ को जरुर विश्वास में रखें. यह बंदा आप के हर कार्य में बहुत **शेष आगे....**

प्रबन्ध अथवा प्रबन्धन आखिर है क्या?

✍एन.के.शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक,

प्रबन्ध या प्रबन्धन औपचारिक संगठित समूहों में लोगों द्वारा और लोगों के साथ मिलकर काम करने की कला है. प्रबन्ध को चाहे एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाए अथवा किसी क्रियाकलाप के रूप में, मुख्य अंग इसके पांच ही सामने आते हैं। आयोजन, संगठन, समन्वयन,पर्यवेक्षण तथा नियन्त्रण। अवसर इस बात पर भी चर्चा होती रहती है कि प्रबन्ध एक कला है अथवा विज्ञान, या यह जन्मजात होता है या इसे सीखा जा सकता है। जहां तक प्रबन्ध को विज्ञान मानने का प्रश्न है तो इसे विज्ञान के ढांचे में पूरी तरह नहीं रखा जा सकता। विज्ञान मूलतः प्रेक्षण प्रयोग तथा वैज्ञानिक अन्वेशण पर आधारित पुष्ट, क्रमबद्ध व नियमबद्व ज्ञान पर आधारित होता है।

प्रबन्ध की प्रयोगशाला लोग है। विज्ञान के सिद्धान्त हर स्थिति में लागू होतें है, परन्तु प्रबन्ध के सिद्धान्तों के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। प्रबन्ध के जो नियम अमेरिका में सफल हो सकते हैं, हो सकता है वे भारत में सफल न हों। सार रूप में कहा जा सकता है कि सिद्धान्तों, संकल्पनाओं, तथा नियमों के निर्माण की दृष्टि से तो प्रबन्ध विज्ञान के करीब है मगर इनके व्यावहारिक प्रयोग की दृष्टि से भिन्न है। इसी तरह कला की दृष्टि से भी प्रबन्ध कुछ मामलों में कला के करीब हैं। और कुछ मायनों में दूर। किसी वस्तु के प्रयोग, उपयोग की कुशलता ही कला है इस दृष्टि से प्रबन्ध कला के करीब है, क्योंकि इसमें मानवों, संसाधनो प्रक्रियाओं के कुशल उपयोग की बात आती है।लेकिन जहां कला की अन्य विशेषताओं व्यक्तिगत सृजनात्मकता आदि का प्रश्न आता है, वहां प्रबन्ध कला से थोड़ा दूर चला जाता हैं क्योंकि इसमें सामूहिकता नियमबद्धता आदि की बात आती है। प्रबन्ध क्यूं जरूरी है और प्रबन्धन क्यों होना चाहिए, यह जानने के लिए अगर हम पहले यह जान ले कि प्रबन्ध के लाभ क्या हैं तो हमारे इन सवालों के जवाब बड़ी आसानी से मिल जाएगें।

–प्रबन्ध उन उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक है जिनके लिए उद्यम की स्थापना की गई है।

–प्रबन्ध प्रतिष्ठान को ठीक प्रकार और प्रभावी ढंग से चलाने में सहायता करता हैं।

–प्रबन्ध न्यूनतम प्रयास द्वारा अधिकतम दक्षता प्राप्त करने में सहायता करता है।

–प्रबन्ध ऐसे वातावरण का निर्माण करता है जिससे उत्पादन–अधिकतम हों

–प्रबन्ध हर प्रकार के उपव्यय से बचाता हैं

–प्रबन्ध निम्नतम लागत पर अधिकतम उत्पादन करने में सहायक होता है।

–प्रबन्ध, उद्यम को प्रतियोगिता का सामने करने के योग्य बनाता है।

–प्रणाली आदि का समुचित और लाभदायक तरीके से उपयोग किया जा सकता है।

–प्रबन्ध, उद्यम की प्रगति तथा संवृद्धि को सुनिश्चित करता है।

–देश में जितने अच्छे प्रबन्धक होंगें, देश की आर्थिक स्थिति भी उतनी ही मजबतू होगी।

–अच्छे प्रबन्ध के परिणामस्वरूप ही नए–नए उद्यमों की स्थापना होती है जिससे लोगो को, रोजगार के नए–नए अवसर प्राप्त होते है।

–प्रबन्ध, श्रमिकों और मालिकों के बीच अच्छे संबंध बनाने और औद्योगिक झगड़ों को समाप्त करने तथा कार्मिकों में परस्पर सहयोग बढ़ाने में सहायक होता है।

प्रबन्ध के इन लाभों से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी उद्यम का कोई न कोई लक्ष्य होता है। चाहे वह उत्पादनोन्मुख संस्था हो, बिक्री करने वाली यानि ”मार्केटिंग संस्था“ हो, या सेवा संस्था हो, या परामर्श देने वाली संस्था अर्थात् ”कन्सलटेन्सी संस्था“ हो। उस संस्था के लक्ष्य अथवा उद्देश्य प्राप्त करने के लिए समुचित प्रबन्धन एक व्यवस्थित क्रिया–कलाप के माध्यम से ही संभव है न कि किसी एड–हॉक या अनियमित तरीके से। इस व्यवस्थित क्रिया–कलाप को हम चार भागों में बांट सकते है। आयोजना, संगठन, निदेषन तथा नियन्त्रण। ये चारों गतिविधियां कोई भी प्रबन्धक अकेले नहीं चला सकता। अतः उसे अन्य लोगों के सहयोग की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है कि प्रबन्धाक एक सामूहिक गतिविधि है।दूसरे क्रिया–कलापो का एक बार शुरू करने से ही काम नहीं चल जाता, इनमें निरन्तर सुधार लाने तथा इनकी निरन्तर निगरानी भी बहुत जरूरी होती है, वरना सारी व्यवस्था में एक ठहराव जैसा आ जाता है जो कि किसी उद्यम या संस्था के लिए बहुत ही अहितकर होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि गतिशीलता और निरन्तरता न केवल एक अच्छे प्रबन्धन की पहचान होती है बल्कि उसकी आवश्यकता,वरन् अनिवार्यता होती है। एक अच्छे प्रबन्धक से उद्यम में एक ऐसे वातावरण का निर्माण होता है जिससे उद्यम में कार्यरत हर व्यक्ति अपने कार्य को दक्षता से निश्पादित करने के लिए कटिबद्ध हो जाता है और उद्यम के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अपना अधिकतम योगदान देने के लिए तत्पर रहता है। सारांष में हम यह कह सकते हैं कि प्रबन्धन, आज के युग के किसी भी उद्यम के लिए एक अनिवार्यता है। आज हर उद्यम, बाजार में अच्छे से अच्छा प्रबन्धक लेना चाहता है। इसके परिणामस्वरूप आज विकासषील देषों में प्रबन्ध संस्थानों की बाढ सी आ गई है। भारत में पिछले पांच वर्शो में जितने नए प्रबन्ध संस्थान खुले हैं उतने कुल मिलाकर पिछले ५० वर्षो में भी नहीं खुले। आज हर बी.ई. पास करने वाला एम.बी.ए. करने की सोचता है। आज प्रबन्धन पहले की तरह केवल एक सामान्य विषय नहीं रहा बल्कि इसकी अनेक शाखाओं का विकास हुआ है जैसे विपणन प्रबन्ध, पदार्थ प्रबन्ध, वित्तीय प्रबन्ध, कार्मिक प्रबन्ध, इत्यादि। यूरोपीय देशों में निर्यात के लिए

आज आइ.एस.ओ. प्रमाणन एक आवश्यक शर्त हो गई है। आइ.एसओ.,यानि इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड्स ऑर्गेनाइजेशन का यह प्रमाणन टीक्यूएम यानि टोटल क्वालिटी मैंनेजमेंट पर आधारित होता है। इससे भारतीय कंपनियों के उत्पादनों में ”गुणवत्ता प्रबन्धन“ जरूरी हो गया है। उद्यमों में आजकल लोग ”स्पेस मैनेजमेंट“, ”टाइम मैनेजमेंट“ के महत्व को जानने और समझने लगे है। ऊपर किए गए प्रबन्ध-विवेचन से यह तथ्य एकदम स्पश्ट उभर कर सामने आ रहा है कि कडी अन्तर्राश्ट्रीय प्रतियोगिता के इस युग में प्रबन्धन अत्यन्त आवष्यक और महत्वपूर्ण हो गया है। दूसरे षब्दों में यह कहा जा सकता है बिना समुचित प्रबन्धन के आज किसी भी उद्यम के ऊपर और बाजार-प्रतियोगिता में षामिल होने की कोई गुंजाइश नहीं है।.

पिछले हफ्ते मैं पुणें से मुंबई अपनी कार से जा रहा था. जिस रास्तें पर मैं चल रहा था, वो भारत के कुछ एक सबसे अच्छे राजमार्गो में से हैं. मैं उस राजमार्ग की सफाई, चिकनी सड़क और चौड़ाई देख कर मन ही मन उसकी तारीफ कर रहा था. सिर्फ राजमार्ग ने हीं नहीं, उस सड़क के दोनों तरफ और बीच में बड़े करीने से लगाए पेड़ों ने भी मेरा मन जीत लिया था. असलियत ये है कि इस प्रकार के सुंदर और व्यवस्थित राजमार्ग भारत में आम बात नहीं हैं. हालांकि यूरोप या यूएई में आपको ऐसे बहुत बहुत से राजमार्ग मिल जाएंगे. इतनी व्यवस्था के बाद भी मुझे आखिरकार लोनावला के पास अधूरी बनी सड़क मिल ही गई. जिसके कारण सभी वाहनों को घूम कर जाना पड़ रहा था या दो या तीन घंटे के लिए जाम लग जाता था.

मैं भी ऐसे ही एक जाम में फंस गया. इस लंबे ट्रैफिक जाम का फायदा मिलता है वहीं आस-पास रहने वाले लोगों को. वे जाम में फंसे लोगों को लोनावला की चिक्की, मूंगफली या पानी जैसी ही अन्य बहुत सी चींजें बेचते है. घंटो तक लगे ट्रैफिक जाम में इन लोगों का छोटा सा व्यापार हो जाता है. मौके का फायदा उठाने वाले इन लोगों को मैं प्रतिभाशाली पर बेहद छोटे स्तर का उद्योगपति मानता हूॅ.थोड़ी देर में ट्रैफिक चलने लगा. हमारे वाहन तेजी से आगे बढ़े. लेकिन अपने वाहनों के साथ मैंने कुछ और चीजें भी हवा में चलती देखी. हमारे वाहनों की हवा से कागज, पालीथिन और कई तरह के लिफाफें साथ में उड़ रहे थे. ये लिफाफें उन्हीं खाने-पीने की चीजों के थे, जो ट्रैफिक खुलने का इंतजार कर रहे वाहन मालिकों को बेची गई थी. अपने अपने वाहनों में बैठे समाज में सम्मानित और प्रतिष्ठित पद प्राप्त लोगों ने कूड़ें को सड़क पर फेंक दिया था.

इसी यात्रा में आगे जाकर जैसे-जैसे हम मुंबई के करीब आते गए, यातायात भारी होता गया. सड़क पर कई जगह हमें रुकना पड़ा. हमारे लिए यह कोई नई बात नहीं थी. इसकी आशा हमें थी. इस उदाहरण में लापरवाही की भावना दिखती हैं. पैकेट फेंकने वाले न केवल प्रौढ़, शिक्षित लोग थे, बल्कि कार जैसी मंहगी चीजों के मालिक थे और भारत के शहरी इलाकों में रहने वाले सम्मानित समाज से थे. इतना सब उनके पास होते हुए भी, उनमें सामाजिक चेतना और पर्यावरण की सुरक्षा की भावना नहीं थी. दरअसल, उनमें अनुशासन नहीं था. ❍

आया जमाना ई-बाइक्स का

ई-बाइक दरअसल बैटरी से चलने वाले दोपहिया वाहन हैं. वाहन को चलाने के लिए एक मोटर लगी होती है, जो अपनी ऊर्जा इस बैटरी से लेती है. आम तौर पर एक बार चार्ज करने पर ई-बाइक ३० से ७० किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकती है. बैटरी को एक बार पूरी तहर चार्ज करने में छह से आठ घंटे का समय लगता है. कई ई-बाइक में बैटरी को अलग करने की सुविधा भी होती है. जिससे बहुमंजिला ईमारतों में रहने वाले अथावा काम करने वाले लोग अपने घर या कार्यालय में बैटरी ले जाकर चार्ज कर सकें. सरकार द्वारा निर्धारित नियमों के तहत किसी भी ई-बाईक में २५० वाट से ज्यादा क्षमता की मोटर नहीं लगाया जा सकता. इनकी अधिकतम गति सीमा भी २५ किमी प्रतिघंटा तय हैं. ई -बाइक का मुख्यय लाभ यह है कि इनसे न तो कोई शोर होता है और नहीं प्रदूषण. इसके अलावा इनके पंजीकरण की भी जरुरत नहीं होती.

अभी तक आशा यो बाइक्स व कैलाश इलेक्ट्रिक व्हीकल का ही दबदबा था. लेकिन हीरो साइकिल्स ने भी हीरो इलक्ट्रिक ब्राड नाम से अपने बैटरी चालित दोपहिया वाहनों की श्रृंखला लांच की हैं. जबकि एटलस की पहली ई-बाईक जनवरी २००७ के मध्य तक बाजार में आने की संभावना हैं. इसके अलावा एवन भी ई-बाइक के दो नए मॉडल बाजार में उतार रही हैं.

एवन के सभी मॉडलों की कीमत १४ से २० हजार रुपये के बीच हैं. ई-स्कूटर्स की कीमत १८ से २७ हजार के बीच है. एटलस की ई-बाइक की कीमत करीब १६ हजार रुपये होगी. ❍

घरेलू कामकाज के बोझ में सेहत से समझौता न करें

महिलाओं के लिए शादी के बाद की उम्र ऐसी होती है जिसमें या तो वह नौकरीपेशा हो जाती है या घर के कामों में ही व्यस्त रहती है. इस समय कामकाजी महिलाओं को अपने आहार का खास ख्याल रखना होता है. एक तो तो उनके पास समय कम होता है और काम ज्यादा होते है इसलिए उनके लिए नाश्ता तो बहुत ही आवश्यक है. नाश्ता हल्का और सुपाच्य होना चाहिए. साथ ही दोपहर का खाना ऐसा होना चाहिए जिस खाकर सुस्ती न आए और कार्यक्षमता बनी रहे.

दोपहर के भोजन में सभी पोषक तत्व विद्यमान होने चाहिए. यदि दोपहर के भोजन में सभी चीजें लेना संभव न हो तो यह कमी रात के भोजन में पूरी करें. जो महिलाएं नौकरीपेशा नहीं है उनके लिए भी भोजन, नाश्ता आदि सभी संतुलित होना चाहिए. अकसर देखने में आता है कि घरेलू महिलाएं सबका तो ध्यान रखती हैं लेकिन अपने ऊपर ज्यादा ध्यान नही देती. कभी-कभी गलत डाइट के कारण वह मोटी भी हो जाती हैं. मोटापा कई बीमारियों की जड़ होता है इसलिए भोजन में छह तरह के तत्वों का समावेश होना ही चाहिए. यह छह तत्व है-काब्रोहाइड्रेट, प्रोटीन, फैट, विटामिन, मिनरल और पानी.

कार्बोहाईड्रेट चीनी, स्टार्च, ग्लूकोज आदि से मिलता है. इससे शक्ति मिलती है. एक ग्राम कार्बोहाईड्रेट से चार कैलोरी मिलती है. दूध, दूध से बने पदार्थो और अंडे से प्रोटीन मिलता है. एक ग्राम प्रोटीन से भी चार कैलोरी प्राप्त होती है. विटामिनों की प्राप्ति के लिए गाजर, पालक, खट्‌टे फल, केले, सब्जी, मेवे आदि का सहारा लिया जा सकता है. खनिज पदार्थो में कैल्शियम दांतो के लिए बहुत जरुरी है इसी प्रकारा लोहा खून बढ़ाने के लिए जरुरी है.

हर महिला के लिए डाइट अलग हो सकती है पर जरुरी है कि उसमें सभी चीजों का समावेश हो. एक दिन के भोजन में निम्न चीजों का समावेश होना चाहिए-

दूध व दूध से बने पदार्थ-५०० मिलीलीटर, दाल-डेढ़ से दो सौ ग्राम, फल-तीन-चार, नॉनवेज-एक से दो पीस, अनाज-छह से आठ, वसा-प्रतिदिन तीन से पांच छोटे चम्मच तेल, चीनी-प्रतिदिन दो से तीन छोटे चम्मच आइए अब आपके लिए खाने का मेन्यू प्लान करते हैं.

मेन्यू प्लान- चाय के साथ दो बिस्किट

ब्रेकफास्ट कामकाजी महिला-दूध, दलिया या कॉर्नफलेक्स, सैंडविच, एक कप अंकुरित दाल, एक फल.

ब्रेकफास्ट घरेलू महिला-चीला अथवा उपमा या फिर सैडविच, दलिया, अंकुरित दालें और एक फल.

लंच-कामकाजी महिलाएं तो टिफिन ले ही जाती है. वे परांठा, सब्जी, पुलाव, दही आदि ले जा सकती है. उन्हें साथ में एक फल जरुर लेना चाहिए. घरेलू महिलाएं दाल, सब्जी, रोटी, चावल, रायता, दही और सलाद के साथ ही मौसमी फल भी ले सकती है.

शाम की चाय-चाय के साथ बिस्किट या नमकीन ले सकती हैं.

डिनर-मिक्स्ड दाल, मौसमी, सब्जी, रोटी, चावल, सलाद, दही और कोई स्वीट डिश तथा फ्रूट कस्टर्ड लिया जा सकता है.

जब प्रेम जगजाहिर हो जाए?

........मदद करेगा. इसेपटाए रखना बहुत जरुरी है. प्रायः छोटे साले टाफी, बिस्कुट या फिल्म की टिकट के लालच में अनेक बड़े बड़े कार्य संपादित कर दिया करते हैं. खासतौर से भांडा फूट जाने के बाद के ‘बनवास काल’ में. (जब प्रेमिका से वार्ता कर पाना कुछ मास के लिए प्रायः बंद हो जाया करता है.)

छोटे साले आप के लिए पत्रों के आदानप्रदान, उधर की खबरों के प्रसारण और इधर के संदेश का निस्तारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं.

अंत में, अगर चंहु ओर निराशा ही निराशा हाथ लगे, सारा परिदृश्य निषेधात्मक ही हो तो फिर येन केन प्रकारेण प्रेमिका से साक्षात्कार कर के संदेश पहुंचा के घर से भाग कर विवाह कर लेने में भी कोई बुराई नहीं हैं. आप द्वारा ‘महानायक’ स्वरुप धारण करते ही वे मित्र, जो अब तक आप की खिल्ली उड़ाते रहे, आप को ‘मजनू’, ‘रोमियों’, आदि न जाने क्या क्या कहते रहे, आप को हीरो तो मानेंगें ही, मदद भी करेगें.

अतः प्रेमी प्रेमिका दोनों के लिए जरुरी है कि प्यार करने का कोई भी मौका हाथ से न जाने दें और अवसर पा कर स्वयं को मजनू या लैला की उपाधि से अवश्य ही अलंकृत करें.

> युवा लोग किसी कार्य की समाप्ति पर थकते हैं, जबकि वृद्ध पुरुष कार्य के प्रारंभ में।
>
> **टी.एस.इलियट**

साहित्य समाचार

ए.कीर्ति बर्द्धन को कविरत्न सम्मान

महिमा प्रकाशन एवं छत्तीसगढ़ शिक्षक-साहित्यकार मंच द्वारा उनकी प्रकाशित साहित्यिक कृति ‘सच्चाई का परिचय पत्र पर हिरदे कवि रत्न सम्मान-०६ द्वारा विभूषित किया गया. अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा विकास संगठन, गाजियाबाद द्वारा श्री प्रयाग नारायण स्मृति सम्मान से भी श्री ए. बी. कीर्ति बर्द्धन सिंह को सम्मानित किया जा चुका हैं.

छायावादी कवयित्रि तारा सिंह सम्मानित

साहित्यिक संस्था, रंजन कलश, भोपाल द्वारा दशवें सम्मान समारोह में छायावादी कवयित्रि डॉ. तारा सिंह को उनकी सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए ‘रजन कलश शिव सम्मान२००६ से अलंकृत किया गया. इस अवसर पर समारोह के अध्यक्ष भोपाल के दूरर्शन निदेशक श्री शशांक एवं रजन कलश के अध्यक्ष डॉ. सुशील गुरु ने प्रतीक चिन्ह, शाल, प्रशस्ति-पत्र, एवं श्रीफल प्रदान कर सम्मानित किया.

१४ वें अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य समारोह में डॉ. तारा सिंह को राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान प्रदान किया गया.

अंगिका महोत्सव सम्पन्न

जाहन्वी अंगिका संस्कृति संस्थान के तत्वावधान में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना में सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. सच्चिदानन्द सिंह की अध्यक्षता में अंगिका महोत्सव धुमधाम से मनाया गया. समारोह का उद्‌घाटन करते हुए अंगजनपद गौरव, डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव ने कहा कि अंगिका प्राचीन अंगजनपद की लोकप्रिय भाषा हैं. आधुनिक समय में अंगिका साहित्य की श्री वृद्धि में डॉ० चकोर और उनके द्वारा विगत छत्तीस वर्षो से सम्पादित अंगिका मासिक पत्रिका ‘अंग माधुरी’ का बहुत बड़ा योगदान हैं. हमें अंगिका की श्रीवृद्धि में उनका हाथ बटाना चाहिए. इस ओर डॉ. रमेश आत्मविश्वास, डॉ. प्रदीप प्रभात, श्री जर्नादन यादव, डॉ. वॉछा अंजन भट्‌ट, डॉ. सरिता सुहावनी आदि ने काम किया हैं. किन्तु अभी बहुत अधिक काम करना बाकी हैं.

इस अवसर पर संस्कृति पुरुष श्री अनिल सुलभ, श्री नृपेन्द्र नाथ गुप्त, डॉ० भूतनाथ, विलास बिहारी, कैलाश झा किंकर, ज्योतिशंकर चौबे, गोरेलाल मणिषी, डॉ. सतीशराज पुष्करणा, डॉ० विनय प्रसाद गुप्त आदि ने भी अंगिका भाषा और साहित्य पर अपना विचार व्यक्त किया.

इस अवसर पर डॉ. नरेश पाण्डेय द्वारा लिखित श्री रामदूत हनुमान, गॉव-जवार, मीरा की प्रेम साधना, डॉ. भूतनाथ द्वारा अनूदित तॉक-झॉक एवं डॉ० वाच्छा अंजन भट्‌ट विरचित पुस्तक फूल झामर का लोकार्पण भी किया गया. कार्यक्रम में डॉ० कुमार भुवनेश, डॉ. विनय प्रसाद गुप्त एवं कैलाश झॉ किंकर को श्री गोपीनाथ तिवारी सम्मान से सम्मानित किया गया.

स्वातत्योत्तर हिन्दी साहित्य का सम्यक अनुशीलन

विगत ५६ वर्षो के हिन्दी साहित्य का प्रामाणिक इतिहास संकलित व प्रकाशित होने जा रहा है. सभी लेखक/प्रकाशक निम्न विवरण शीघ्र प्रेषित करें.

विविध खंडो में प्रकाशित होने वाले ऐतिहासिक ग्रंथ में ऐसे प्रत्येक साहित्यकार का विवरण संकलित करना तथा युवा पीढ़ी व शोधार्थियों के भावी उपयोग हेतु इसे प्रकाशित करके स्वातंत्योत्तर हिन्दी साहित्य के समग्र इतिहास के अभाव की पूर्ति करना हमारा लक्ष्य हैं. अतः सभी विधाओं के रचनाकारों से, जिनकी एक या अधिक कृतियां भी प्रकाशि हो चुकी हों, निम्न विवरण आमंत्रित हैः
१.नाम २.जन्म तिथि व स्थान ३.पारिवारिक परिचय ४.शिक्षा
५.लेखन की विधाएं ६.प्रकाशित कृतियों का विवरण तथा प्रकाशन वर्ष
७.कृतियों पर प्राप्त सम्मान/पुरस्कार आदि का विवरण तथा इन पर होने वाले शोध कार्यो का ब्यौरा, ८.परिवार में अन्य कोई साहित्यकार हो तो उनका भी उपर्युक्त अनुसार परिचय दें. ९. सम्प्रति १०.संपर्क (पत्र व्यवहार का पूरा पता पिन कोड सहित) फोन मोबाइल

विशेष आग्रहः १. समस्त लेखकों, पत्रकारों व साहित्यिक संस्थओं के पदाधिकारियों से अनुरोध है कि अपने नगर, महानगर, जनपद में अपनी जानकारीमें सभी ऐसे रचनाकारों का उपर्युक्त विवरण हमें प्राप्त कराने में सहायक बने जो इस ऐतिहासिक ग्रंथ में प्रकाशन के सुपात्र हैं. हम आभारी रहेगें.

२. प्रस्तावित ऐतिहासिक ग्रंथ कैसे बहुपयोगी बने, इस संदर्भ में आपके अमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत हैं.

उमाशंकर मिश्र,
मुख्य संयोजक एवं सपादक, यू.एस.एम पत्रिका, उद्योग नगर प्रकाशन,
६९५, न्यू कोट गांव, जी.टी.रोड, गाजियाबाद-२०१००१,
फोनः२८६०११०, ९८१८२४९६०२

अध्यात्म

जीवन का सत्य

✍ श्रीमती उषा रानी श्रीवास्तव, इलाहाबाद

यह सत्य है कि जीवन एक सघर्ष है. मनुष्य यदि जीवन में सघर्ष न करे तो जीवन की गाड़ी आगे नहीं बढ़ सकती. इसी संघर्ष से मनुष्य को आध्यात्मिका का ज्ञान प्राप्त होता है, क्योंकि व्यक्ति जब जीवन को आगे बढ़ाता है तो उसे शांति भी चाहिये उस शांति की खोज में वह गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए प्रभु की ओर अग्रसरित होता है. वहीं से उसे क्षणिक शांति प्राप्ति होती है. गीता 'कर्म प्रधान है. कर्म का क्षेत्र बहुत ही वृहत है. यदि व्यक्ति सही दिशा में अपना कर्म करे और फल की आशा न करे तो जीवन में दुख का प्रवेश नहीं होगा. जब व्यक्ति किसी फल की प्राप्ति की आशा करता है तो वहीं से जीवन का संघर्ष शुरु होता है और सुख तथा शांति समाप्त हो जाती है. मनुष्य आशा पाने की इच्छा रखता है यदि उसकी आशा के अनुरुप कार्य नहीं हो तो वहीं कष्ट का उदय होता है और जीवन का संघर्ष शुरु हो जाता है. उदाहरण स्वरुप कहानी का कथानक तब तक नहीं बढ़ता जब तक उसमें विलयन न हो. क्योंकि वहीं कथानक को आगे बढ़ाता है. उसी प्रकार जीवन में सघर्ष एक विलयन की भूमिका अदा करता हुआ जीवन रुपी कथानक को आगे बढ़ाता हैं.

जीवन के सुख और दुख दो पहलू है. जहॉ सुख है वहीं दुख है परन्तु प्राणी सुख का आनन्द भोग कर खुश होता है परन्तु दुख आने पर वह भाग्य को दोष देता है और जीवन समाप्ति की बात करता है. मनुष्य संसार में अच्छे कार्य के लिए ही जन्म लेता है. वही मानव अपना जीवन सार्थक मानता है जो दोनों समयों में चाहे सुख या दुख हो समान रहता है. अपना कर्म निरन्तर करता रहता है. अंत में जीवन समाप्त होने पर भी मुस्कुराता हुआ जाता है. उसके अच्छे कर्म ही जीवन की सार्थकता को सिद्ध करता है.

प्राणी मात्र को जीवन के उतार-चढ़ाव से घबड़ाना नहीं चाहिए. अर्थात कभी सुख कभी दुख की जीवन रुपी नाव ऊपर नीचे होती रहती है. जहॉ मृत्यु सत्य है वहीं जीवन भी सत्य है. जो संसार में आता है उसे निश्चित समय पर जाना भी पड़ता है परन्तु संसार का कोई भी कार्य समाप्त नहीं होता. यदि प्राणी इसको सत्य मानकर अपना कर्म करता रहे तो दुख नहीं होगा. ईश्वर का विधान है जहॉ प्राणी की सोच में परिवर्तन आयेगा वहीं जीवन का सार सत्य हो जायेगा और सुख-दुख और संघर्ष सभी से छुटकारा मिल जायेगा, जीवन निरन्तर चलता रहेगा और दुख का आभास नहीं होगा. कर्म में ही सुख है, जो सुख हम दूसरों को अपने सत्कर्मो से देते है वहीं पर ग्लानि द्वेष ईर्ष्या का समावेश जीवन में नहीं हो पाता है. जब हम सत्कर्म में जुटेगें तो आत्मिक सुख की प्राप्ति होगी और यही जीवन का मूल भी होता है.

चिट्ठी आई है...

सन् २००७ सम्वत १४२७ हिजरी

क्या आपको प्रतीक्षा थी
मेरे शुभकामना संन्देश की
नववर्ष पर?
यहि हॉ तो वह बेकार थी
क्योकि मैं भेजता ही
यदि नहीं, तो वह भी बेकार थी
क्योकि मैं तो भेजूंगा ही
पर कठिनाई यह है कि किस तरह दू शुभकामना
जो दे सके आपको किंचित प्रसन्नता नववर्ष पर?
चाहता था लिखना ऐसा कोई
मौलिक! प्रभावी! अनूठा सन्देश
जो ला देता क्षणिक मुस्कान आपके चेहरे पर
....और पूरा हो जाता मेरा उद्देश्य
किन्तु बड़ी माथा-पच्ची के बाद भी नहीं लिख सका
ऐसा कोई वाक्य नववर्ष पर।
कृपया यह न सोचने लगे कि
यह भी है कोई शुभकामना सन्देश
नववर्ष पर?
आपका (और दूसरों का भी)

संतोष खरे, सतना, म.प्र.

+++++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज का अध्ययन किया. इस अंक में डॉ. मालती का लेख 'महादेवी वर्मा के निबन्धें में संस्कृति विमर्श' बहुत सटीक रहा. श्री श्याम विद्यार्थी जी के व्यक्तित्व की जानकारी अच्छी लगी. श्री ठाकुर दास सिद्ध जी के दोहे सराहनीय रहे. भानु प्रताप सिंह 'क्षत्रिय' जी की कविता लुटाओं न व डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी जी की कविता आखें देखे चित्र बहुत अच्छी लगी.

राजीव कुमार, आ.वि., बरेली, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++++++++++++++

हार्दिक अभिनन्दन

दीपावली का यह ज्योति पर्व, नव जागृति का संचार करें।
पावन बेला में हम सब मिल, परस्पर स्नेह का प्रसार करें।
वतन हित करें चिन्तन, स्वार्थ छोड़, सेवा का संकल्प करें।
लीन रहे कर्तव्य पथ पर, समाज संगठन हित चर्चा करें।
शुभ हो नव वर्ष, सुख-शान्ति, सुयश, धन वैभव प्रदान करें।
भगा दे कुरीतियों के तिमिर को, सबके हृदयों में प्रकाश भरें।
होवें सब संगठित, समाज में स्नेह की ज्योति प्रज्जवलित करें।

राधेश्याम परवाल, जयपुर-३०२००१

कविताएं

डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय के दो गीत

विरह गीत मत गाओ साथी

विरह गीत मत गाओ साथी, नयन हमारे बरस पड़ेगें।
तुमने ऐसा दर्द सुनाया, कांप गयी यह मेरी काया।
अपनी भी तो यही दशा है, कुहरा कष्टों का है छाया।।
अब मत और सुनाओ साथी, ऑसूं रोके से न रुकेंगे।
विरह गीत मत गाओ साथी, नयन हमारे बरस पड़ेगें।
जाने कितनी रातें बीती, और दिनों का किया न लेखा।
जीवन भर था आस लगाये, फिर भी सुख का सूर्य न देखा।।
मत घावों का घटा उठाओ, धैर्य बांध सब टूट पड़ेगें।
विरह गीत मत गाओ साथी, नयन हमारे बरस पड़ेगें।
मेरी तेरी कथा एक है, फिर क्यों बीती दुहराते हो।
अरे बात तो सुनो हमारी, क्यों कर विनती ठुकराते हो।
जग में दर्द न बांटो साथी, अपने ही सब हंसी करेंगे।
विरह गीत मत गाओ साथी, नयन हमारे बरस पड़ेगें।
कैसे हो विश्वास किसी का, किस पर अपनी आस लगाये।
अपना जीवन जियें स्वयं ही, खुद ही अपनी लाश उठायें।
अब मत देर लगाओ साथी, चलो कहीं हम और चलेंगें।
विरह गीत मत गाओ साथी, नयन हमारे बरस पड़ेगें।

जीवन जलाया होम सा

उम्र भर विश्वास को मैने गलाया मोम सा।
और यह जीवन सदा मैंने जलाया होम सा।।
अर्चना अपनी लुटाकर उपहास में पीता रहा।
मुस्कान दे दी आपको परिहास में जीता रहा।।
स्वतः कुंठित धैर्य को मैंने बढ़ाया व्योम सा।
और यह जीवन सदा मैंने जलाया होमा सा।
वर्चस्व मैं देता रहा हूँ आपके अभिलाष को।
सर्वस्व मैं खोता रहा, स्वयं के उल्लास को।।
क्रोध की विष प्यालियॉ मैंने पिया है सोम सा।
और यह जीवन सदा मैंने जलाया होम सा।
निर्मूल भ्रम में आपने क्यों तोड़ दी आस्था हमारी।
बिना विचारे ही आपने क्यो मोड़ दी गाथा हमारी।।
पूर्ण था जो रिक्त है अब नील नीदर व्योम सा
और यह जीवन सदा मैंने जलाया होम सा।।

अर्थ पूर्ण नवीन दोहे

१. नेकी कर भूलो सदा, बॉटों इतना प्यार।
वर्षा हो हर नैन से, छूटे जब संसार।
२. दुनिया में क्यों डूबते, देगी तुझे डुबोय।
करनी कुछ ऐसी करो, दुआ करें हर कोय।।
३. बंध कर अर्थी चल दिये, फूॅक दिये श्मसान।
कुछ तो ऐसा कर चलो, बनी रहे पहिचान।।
४. देख जनाजा सब कहें, मिथ्या सब संसार।
मुड़ते ही सब भूलते, याद रहे घर-बार।
५. धोखा दे चोरी करें, मन्दिर जोड़े हाथ।
मूरख समझा क्या उसे? देगा तेरा साथ।।
६. संगत कीजै साधु की, देती मैल निकाल।
निर्मल मन में हरि बसैं, दरस मिले तत्काल।।
७. धनवानों की कोठियॉ, दीखें भव्य विशाल।
दीन-हीन को चूसतें, होता नहीं मलाल।।
८.महलों में जो रह रहे, समझे कैसे दर्द।
तपन न देखी धूप की, देखी रात न सर्द।।
९. मुश्किल से मिलता कभी, कहीं किसी को प्यार।
मान उसे परमात्मा, करे जो सच्चा प्यार।।
१०. चन्दा सबका देवता, करें सभी स्वीकार।
पुजता करवा चौथ को, चॉद ईंद आधार।।

वी.के.अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.

गज़ल

आंसुओं से तर बतर वो आशिकी का दौर था.
दीवानगी थी किस कदर जबानियों का दौर था।
आइनों ने सच कहा सच के सिवा कुछ भी नहीं।
अक्श मेरे कह रहें वो दिल नशी कोई और था।
मां के हाथों की पकी वो सोंधी-सोधी रोटियां।
मॉ के प्यार से सना बो भात का जो कौर था।
लाड़ले बेटे मेरे अब हो गये जवान।
वेसखियॉ थे, जिंदगी का लड़खड़ाता दौर था।
जिंदगी तेरे उजाले मौत की स्याही से हारे
मेरा तो जीना यहॉ बस लाश के बतोर था।
बाग में मायूस था वो सुखा हुआ जो पेड़ था।
भीड़ ही में गुम गया वो आदमी कमजोर था.

महेन्द्र श्रीवास्तव, दमोह, म.प्र.

वेलेटाइन डे पर सभी छात्र/छात्राओं को हार्दिक बधाई

मनोज कुशवाहा
पूर्व उपाध्यक्ष,
बाबा राघव दास भगवान दास
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
आश्रम, बरहज, देवरिया

लघुकथाएँ

कितना पैसा और भेजूं?

“बेटा! निक्की” मैं “मम्मी” बोल रही हूॅ?

“बोलो मम्मा, क्या मैं तुम्हारी आवाज नहीं पहचानता? अच्छी तरह से पहचानता हूॅ.”

“बेटा वो आश्रम वाले कह रहे थे अब आपकी सेवा आपके बेटा-बहू को करनी चाहिए. ऐसा समय आ गया है.”

“मम्मा ये इण्डिया नहीं हैं कि मुझे तत्काल छुट्‌टी मिल जाये. मैं जिस अकोमडेसन(आवास) में रहता हूॅ वहां केवल एक छोटा-सा कमरा और एक बहुत छोटा-सा किचन हैं. उसमें तीसरा आदमी भी नहीं रह सकता. मैं इसका बाईस हजार रुपये महीना दे रहा हूॅ. इससे बड़ा भी किराये पर नहीं ले सकता.”

“अच्छा आश्रम वालों से पूछो उन्हें ज्यादा पैसा चाहिए क्या? बताओं कितना पैसा और भेज दूं. परन्तु मम्मा, मैं न आ सकता हूॅ और न तुम्हें साथ ले जा सकता हूॅ.”

“तुम्हारी तबियत कैसी हैं?”

(मां, टेलीफोन टेबल पर सर झुका लेती हे और पिप पिप पित की आवाज आती है) उधर मां का सिर टेलीफोन पर झुक गया और पिप पिप पिप.... .जारी थी.

ललित नारायण उपाध्याय,
खण्डवा, म.प्र

……

मनोकॉमना

अशोक की दो बेटीयॉ बड़ी सुंदर थी. एक थी पुष्पा दूसरी का नाम लता था. अशोक की धर्म पत्नी हेमा का फिर से पैर भारी था, अशोक की मॉ तारा ने मन ही मन में भगवान से प्रार्थना की कि अबकी बार एक बेटा दे यहीं मेरी मनोकामना हैं. मैं आभारी रहूॅगी. अचानक हेमा दर्द से व्याकुल होने लगी तो तारा ने अस्पताल में शरीक करवा दिया.

रात नौ बजे हेमा ने एक नन्हें बेटे को जन्म दिया, तारा ने अनुभव से जान लिया कि बेटा हुआ, भगवान ने मेरी सुन ली वह बड़ी खुश थी. डॉक्टर ने तारा से कहा कि बेटा हुआ हैं मगर. ... हमने बहुत कोशिश की हेमा न बच सकी. तारा पर बिजली टूट पड़ी.

लतीफ ‘आरजू’ कोहीरी, मेढ़क,
आन्ध्र प्रदेश

……

समझौता

बेटे के ब्याह से ज्यादा खुशी धुयेन्द्र बाबू को मिलने वाले दहेज से हो रही थी. लम्बी बांट जोहने के बाद तैयार हुई थी यह दहेज की फसल. बड़े अरमान के साथ धुयेन्द्र बाबू ने बेटे तपेन्द्र का ब्याह तय किया था. बधु पक्ष के लोग भी किसी भी कीमत पर इस रिश्ते को हाथ से नहीं निकलने देना चाह रहे थे पर तपेन्द्र इस ब्याह से नाखुश था. वह किसी अन्य लड़की के मोहफांस में पूरी तरह फंस चुका था. तपेन्द्र किसी भी कीमत पर ब्याह करने को राजी न था. बहु मिन्नतों के बाद धुयेन्द्र बाबू ने बेटे तपेन्द्र को ब्याह के लिए राजी तो कर लिया पर तपेन्द्र भी कच्ची गोलियां नहीं खेला था उसने अपने बाप के सामने एक शर्त रख दी कि वह लड़की देखकर ही ब्याह करेगा. तपेन्द्र की इस शर्त को दोनों पक्षो ने मान लिया. तपेन्द्र लडकी देखने गया और लड़की को देखते ही पहली नजर में नाफीस कर दिया यह इल्जाम लगाकर कि लड़की को कम दिखायी पड़ता हैं.

तपेन्द्र के ब्याह से असहमति से धुयेन्द्र बाबू के पैर के नीचे की जमीन घिसकने लगी हाथ लगने वाली बड़ी रकम भी और धुयेन्द्र बाबू को खुद की मान मर्यादा धूल में मिलती दिखने लगी. लाख मिन्नतों के बाद भी तपेन्द्र ब्याह के लिए राजी नहीं हुआ. धुयेन्द्र बाबू भी कहा हार मानने वाले थे. दहेज की रकम और अपनी छूछी मान मर्यादा को देखकर उनकी नजर छोटे बेटे सतेन्द्र के उपर टिक गयी. धुयेन्द्र बाबू किसी भी कीमत पर यह समझौता रदद नहीं होने देना चाह रहे थे.

बाप धुयेन्द्र बाबू की छूछी शान आन मान और दो परिवारों की कानूनी तकरार, उनकी बर्बादी और दहेज के बढ़ते वजन को देखकर सतेन्द्र ने अपनी उम्र से बड़ी लड़की से ब्याह के समझौते पर अपनी स्वीकृति दे दी.

नन्दलाल भारती, इंदौर, म.प्र

ग़ज़ल

जिन्दगी ही जिन्दगी थी,
एक बस तेरी कमी थी।
गिर गया जब होश आया
कूल पर काई जमी थी।
डूब करके भी न समझा
पॉव के नीचे नदी थी।
तू जिसे समझा कि तेरी
हर किसी की चॉदनी थी।
वह किसी की कैद में थी
तू जिसे समझा परी थी।
कौन समझाये तुझे अब
जल नहीं था, रोशनी थी।
तू जिसे अब तक न भूला
वह विरह की रागिनी थी।
साथ अर्थो के न आया
ऐसी भी क्या दुश्मनी थी।

डॉ. इन्दिरा अग्रवाल,
अलीगढ़, उ.प्र.

फलित ज्योतिष का एक पक्ष यह भी

षढ़ वेदांगो के अन्तर्गत ज्योतिष नामक अंग को चक्षु का स्थान प्राप्त है, चक्षु की उपयोगिता चक्षुयुक्त देहधारियों के अपेक्ष चक्षु विहीन अधिक जानते हैं. नेत्रों के बिना शेष स्व-अंगों का भी ज्ञान सम्यक् नहीं पाता. वेदागों के ये चक्षु को भूत, भविष्य व वर्तमान पर भी दृष्टिपात करने में सक्षम हैं. प्राचीन भारतीय मनीषियों ने भी इन वेदांगो (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूवत छन्द व ज्योतिष) को आत्मसात कर अपने चक्षुओं को भी दिव्य कर त्रिकाल दर्शन की अनुभूति की. इन मनीषियों की पांच भौतिक देह प्रकृति के नियमानुसार मूल तत्वों में समाहित तो हो गई लेकिन शाश्वत, सत्य अन्तःकरण से प्रस्फुटित प्रकाश अनवरत रुप से आज भी मानव जीवन पथ को प्रकाशित कर रहा हैं. ज्ञान का अवसाद इन मनीषियों के ग्रंथों में लिपिबद्ध रुप से मिलकर मानवता की सेवा कर रहा हैं. इसी परम्परा का ग्रंथ भावकुतूहल जीवननाथ विरसित; जिसमें ग्रहों की अवस्था का निर्धारण कर फलादेश की रोचक व्यवस्था की गई हैं. ग्रहों की १२ अवस्थायें बताई गई है जो क्रमशः ये है-१.शयनावस्था २. उपवेशनावस्था ३. नेलपाणि अवस्था ४. प्रकाशावस्था ५. गमनावस्था ६. अगमनावस्था ७. सभावस्था, ८. आगमावस्था ६. भोजनावस्था १०. नृत्यलिप्सावस्था ११. कौतुकावस्था १२. निद्रावस्था

उपरोक्त १२ अवस्थाओं में प्रत्येक में स्थित भिन्न भिन्न ग्रह का फल भिन्न है, फलादेश से पूर्व इनके निर्धारण की पद्धति इस प्रकार है-

जिस ग्रह की अवस्था ज्ञात करनी हो उस ग्रह के नक्षत्र की संख्या से गुणाकर ग्रह जितनें अेश में स्थित है उस अंश से गुणाकर, गुणनफल में इष्टधटी जन्म नक्षत्र व लग्न संख्या को जोड़कर १२ का भाग देना चाहिए, शेष संख्या की अवस्था अभीष्ट ग्रह की होगी-

उदाहरण-किसी का जन्म नक्षत्र अश्विनी, सूर्य मृगशिरा में वृष के १२ अंश में ज्येष्ठ शुक्ल तिथि १२ इष्ट घटी ६.१५ मिथुन लग्न में हुआ है. नियमानुसार ५ (सूर्य नक्षत्र) X9(सूर्य ग्रह संख्या)X13(सूर्य वृष के १३ अंश पर स्थित हैं)= 65+ 6.15 (इष्टघटी) + 9 (जन्म नक्षत्र)+3(जन्म लग्न)=75/95 इस योगफल में १२ का भाग करने पर शेष संख्या ३ प्राप्त हुई. अतः सूर्य तीसरी अवस्था यानि नेत्रपाणि अवस्था में स्थित है यही प्रक्रिया सभी ग्रहों की अवस्था साधन हेतु प्रशस्त हैं. यद्यपि ग्रहों की बालादि अवस्था दीप्तादि अवस्था का निरूपण फलकथन सामान्यतया होता ही है तथापि शयनादि इन अवस्थाओं के आधार पर फलकी विस्तृत व्यवस्था दी गई हैं. संक्षिप्त सूर्य की बारह अवस्थाओं का फल इस प्रकार है:१. शयनावस्था-पित्त विकार व पाचन क्षमता को कमजोर करता हैं.

२. उपवेशनावस्था-का सूर्य दरिद्र बनाता है. झगड़ालू प्रवृत्ति व दया रहित बनाने का कार्य करता हैं.

३. नेत्रपाणिअवस्था-यह शुभ अवस्था मनुष्य को सुख देता है, बुद्धिमान, धानवान बनाता है, जातक राजकृपा का सुख भोगता हैं.

४.प्रकाशवस्था-अति शुभ अवस्था जातक, समृद्धिशाली पुण्यात्मा व चतुतर होता है.

५.गमनावस्था-जातक गुस्सैल तथा घूमने वाला, आलसी व भयभीत होता हैं.

६.आगमनावस्था-सूर्य जातक की नियम को गिरा देता है, दुष्ट कर्म कर्ता व एकाकी बनाता हैं.

७. सभावस्था-परोपकारी, धनवान, गुणवान, भूमि का स्वामी व मित्रों से युक्त होवे.

८. आगमावस्था-शत्रुओं से वस्त, दुष्ट प्रकृति, पुण्य कर्मो से रहित भी मदोन्मत्त होवे.

६. भोजनवस्था-कुमार्गगामी, जोड़ों में दर्द, शिथिल शरीर वाला होवे.

१०. कौतुकावस्था-राजकृपा में रहने वाला, चतुरवाक्, शक्ति सम्पन्न होवे.

११. निद्रावस्था-विदेश में वास करने वाला, धनहानि करने वाला होवे. यह सूर्य की विभिन्न अवस्थानुसार फल है, जन्म काल में अभीष्ट ग्रह की स्थिति के अनुसार उपरोक्त पद्धति से भी फलादेश का ज्ञान सम्यक् होता हैं. शेष ग्रहों की विभिन्न अवस्थाओं के पृथक फल हैं.

स्नेह बाल प्रतियोगिता-०२

इस प्रतियोगिता में ५ से १२ वर्ष तक के उम्र के बच्चों को नीचे दिए गए विषय पर चित्र बनाकर भेजना होगा. प्रथम स्थान पाने वाले बाल चित्रकार के चित्र को प्रकाशित किया जाएगा तथा द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले का नाम, पिता का नाम, कक्षा व पता छापा जाएगा साथ ही प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा. कूपन लगाना अनिवार्य होगा.. **झगड़ा मत करो कूपन** संपादक, विश्व स्नेह समाज,

बाल चित्र प्रतियोगिता न०१, एल.आई.जी.-६३, नीम सरॉ कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद

प्रतिभागी का नामः.................
पिता का नामः...................... कक्षाः......स्कूल का नामः...पताः...

इधर-उधर की

खुश रहने से कैंसर की आशंका कम होती है

इनसान को मुश्किल से मुश्किल घड़ी में खुश रहना आना चाहिए. कहा भी जाता है कि खुशियां बांटने`से बढ़ती है और गम बांटने से घटता है. एक ताजातरीन शोध के बाद विज्ञानियों ने भी साबित कर दिया है कि अगर व्यक्ति हर वक्त खुश रहे और अपनी सोच सकारात्मक रखे, तो उसके बीमार पड़ने की आशंका कम रहती हैं. बरमिंघम यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं का कहना है कि खुश मिजाज इनसान कैंसर जैसी घातक बीमारियों की चपेट में आने से बच सकता है. एक शोधकर्ता जॉन गॉर्डन का मानना है कि सकारात्मक सोच रखने से और हमेशा खुश रहने से शरीर में एक विशेष प्रकार के हारमोन सिरोटोनीन का स्राव होने लगता है. इस हारमोन से कैंसर के लिए उत्तरदायी कोशिकांए मृत हो जाती हैं और इनसान इस घातक बीमारी की चपेट में आने से बच जाता है. इसकी पुष्टि के लिए विज्ञानियों ने एक टेस्ट टयूब में कैंसर से प्रभावित कोशिका और सिरोटोनीन को रख दिया. इसका परिणाम विज्ञानियों को आश्चर्यचकित करने वाला था. अध्ययनकर्ताओं ने देखा कि सिरोटोनीन के प्रभाव से कैंसर से प्रभावित कोशिकाएं निष्क्रिय हो गई. विज्ञानियों का मानना है कि सिरोटोनीन के स्राव से इनसान की डिप्रेशन नहीं होता है. सिरोटोनीन का स्राव लिम्फोमा कोशिकाओं में होता हैं.

शौक के लिए कोई उम्र नहीं होती

इंसान अगर कुछ करना चाहता है, तो उसके लिए बस थोड़े से साहस की जरुरत होती है. मंजिल तक पहुंचने के लिए रास्तें तो अपने आप ही मिलते जाते है. ९८ साल की ग्लैडी बेक्सटर भी साहस और उत्साह से भरी हुई एक ऐसी ही वृद्ध महिला है. बचपन से ही उसे वॉयलिन बजाने का शौक था. लेकिन वह अपने इस शौक को उस समय पूरा नहीं कर सकी.

अब समय के साथ-साथ उसकी आंखे भी कमजोर हो गई है और गठिया भी रहने लगा हैं. इसके बावजूद उसने अपना सपना पूरा करने का इरादा किया. आज उम्र के इस पड़ाव पर जब लोग आराम करते है, वह अपनी शारीरिक कमजोरियों के बावजूद वॉयलिन सीख रही हैं.

सिखाने वाला प्रशिक्षक भी उसके इस साहस को देखकर चकित हैं. उसका कहना है कि अभी तक उसके छात्रों में ज्यादतर १८ वर्ष के थे. सबसे ज्यादा उम्र की यह पहली छात्रा है जो यह प्रशिक्षण ले रही है

जरा हंस दो मेरे भाय

☠एक बूढ़े ने सुबह उठकर अखबार देखा तो हैराना रह गया कि अखबार में उसके मरने की खबर छपी थी. उसने तुरंत अपने मित्र को फोन किया और पूछा-क्या तुमने मेरे मरने की खबर पढ़ी है?

दोस्त ने जबाब दिया-हां-हां, अभी-अभी पढ़ी है. लेकिन यह बताओं की तुम बोल कहा से रहे हों? क्या तुम्हें दफनाया नहीं गया अभी तक?

☠ एक नाई ने जो बहुत ही तेज धार वाले उस्तरे से शेव कर रहा था, ग्राहक से पूछा-आप कितने भाई है.

तुम्हारे उस्तरें से बच गया तो चार होगें, वरना तीन ही समझों-ग्राहक ने कहा.

☠ एक आदमी डॉक्टर से अपनी जांच करवा रहा था. उसने पूछा-डॉक्टर साहब चश्मा लगाकर मैं पढ़ भी सकूंगा.

हॉ-हां क्यों नहीं-डॉक्टर ने कहा.

ओह फिर तो अच्छा ही रहेगा, अब तक मुझे पढ़ना नहीं आता था-मरीज बोला.

☠ पिता-बेटा गम न करो, भाग्य में फेल होना लिखा था, तो हो गए.

बेटा-शुक्र है. अगर मैं मेहनत करता, तो सारी मेहनत बेकार जाती.

☠नोनू-उस दिन क्रिकेट के खेल में मोहन ने ऐसा शानदार शॉट मारा कि दर्शकों के साथ-साथ सारे खिलाड़ी भी भाग खड़े हुए.

मोनू- ऐसी क्या बात हुई?

नोनू-दरअसल गेंद मधुमक्खी के छत्ते से जा टकराई थी.

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हीग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफत

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त दिए जायेंगें.

पुस्तक समीक्षा

फिर से जन्म धरो भारत में, राष्ट्रपिता तुम आज

अहिन्दी भाषी क्षेत्र पंजाब में रहने वाली सुश्री सुकीर्ति भटनागर ने वास्तव में राष्ट्रभाषा के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया हैं. आपका प्रस्तुत काव्य संग्रह 'चेतना स्वर' ६२ कविताओं को स्थान दिया हैं. इस काव्य संग्रह की प्रथम कविता चेतना के स्वर में देश के प्रति अपनी भावना का परिचय दिया है-

कामना हो चिर विजय की,
कालजयी अक्षर बनें।
देश मेरा विश्व-व्यापी,
चेतना का स्वर बने।

……

अँधेरों की चादर उठ कर तो देखों,
सितारों की मोहक मधुर रोशनी है।
धरा से गगन तक है सुषमा ही सुषमा
धवल चन्द्रमा की नवल चाँदनी है।।

में कवित्रि ने आम आदमी के मन में एक आशा किरण जगाती नजर जगाती है तो 'सती' में सति प्रथा पर कट्टरपंथियों को आड़ें हाथों लिया हैं. त्रासदी में राजनीतिज्ञों की खबर ली है

चरमराई व्यवस्था का क्या,
राजनीतिज्ञों की कुर्सियां सलामत रहें।
हादसों से भरपूर
अखबारी सुर्खियों का क्या
यह तो
आम बात है उनके लिए।

मैं और मेरा प्रियतम में बडें ही सलीके से प्रेमी-प्रेमिका के लिए स्थान चयन किया है, देखिए-

दूर कहीं, अम्बर के नीचे
गहरा बिखरा झुटपुट हो।
वहीं सलोनी नदिया-झरना,
झिलमिल जल का सम्पुट हो।

वह लड़की में कवित्रि ने एक सेविका के हाव-भाव व मनःस्थिति अपनी लेखनी चलाई है. होली नामक कविता में होली को पावनता से खेलने की सलाह देती है तो वीर सेनानी में सैनिको के एकांकीपन को उभारा हैं.

खिला दे फूल कलियों को,
सुवासित जो करें उपवन।
वही सुरभित, वही मुकुलित,
ललित मधुमास होता है।।

……

स्वप्न पुरी में आज कोई फिर
छेड़ गया मधु तान,
नई रागिनी में थिरके हैं,
नएक सुकोमल गान।।

एक कहावत है-'जहॉ न पहुॅचे रवि, वहॉ पहॅुचे कवि' की बात अपने इस काव्य संग्रह में भॅली भाति साबित कर दिया हैं. प्रस्तुत संग्रह की लगभग सभी रचानाएं अच्छी बन पड़ी हैं.

लेखिकाः सुकीर्ति भटनागर
मूल्यः साजिल्द-१०५,
पेपर बैक-५०रु०
प्रकाशकः हिन्दी भाषा सम्मेलन, ७८१, एस.एस.टी नगर, पटियाला, पंजाब
समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कहॉनियों में बहुत की प्रभावशाली शुरुआत की गयी है

.डॉ० रमेश मंगल वाजपेयी प्रस्तुत कहॉनी संग्रह 'मिथ्या-दर्प' में सात कहॉनियों सग्रहित किया है-मिथ्या-दर्प, विष्णु-प्रिया, गोपी, कोरी-चादर, शेरा, एक ही घाट तथा सत्य प्रकाश हैं, ये सभी कहॉनिया रोचक व उद्देश्य परक तो है हीं इनमें साामाजिक जीवन के बड़े ही संवेदनापूर्ण चित्र अंकित हैं. विषय की एकाग्रता इनका सबसे बड़ा गुण हैं. डॉ. बाजपेयी ने कहॉनियों में बहुत प्रभावशाली शुरुआत की है, जो पाठकों के मन में जिज्ञासा पैदा करती है कि अब क्या होगा. कहॉनियों के पात्र पाठकों की सहानुभूति अर्जित करने में पीछे नहीं रहते. कहॉनियां मानवीय धरातल के इर्द गिर्द की होने के कारण इनके पात्र गुण, दोषों को समेटे हुए हैं. कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि लेखक ने बड़ें ही सलीके से इस संग्रह को सजाया है, अपने काल्पनिक शब्दों की माला को यर्थाथ में पिरोया हैं.

लेखकः डॉ. रमेश मंगल बाजपेयी
मुल्यः ३५/-रुपयें मात्र
पुस्तक प्राप्ति स्थलः २८६, बुद्ध नगर, हुसैनगंज, सीतापुर, २६११२५, उ.प्र.
कानोकानः०५८६२-२४६४०५
समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्राप्ति स्वीकारः

१. श्रीमद् भगवद्गीत अधयाय-११ (पद्यानुवाद)
रचनाकारः महेन्द्र जोशी
प्रकाशकः दिव्य प्रकाशन, ३०ए गोपाल नगर, अमृतसर
मूल्यः श्रद्धा

२. आरती के स्वर,
रचयिताः रामकृष्ण त्रिपाठी 'भ्रमर'
पताः६१८ ए, कृष्णानगर, कीटगंज, इलाहाबाद
मुल्यः ५/-रुपये मात्र

कृपया समीक्षा के लिए दो पुस्तकें ही भेजें. एक प्रति प्राप्त होने पर समीक्षा प्रकाशित नहीं की जाएगी.

संपादक